Weather Report
अधिकतम तापमान: 32.0c
न्यूनतम तापमान: 21.0c
हवा गति: 11 कि./घं.
जयपुर सूर्योदय समय
सुबह: 6.06

दैनिक
संजीवनी टुडे
sanjeevnitoday.com
समय के साथ बढ़ता अखबार

वर्ष: 10 अंक: 291 जयपुर, शनिवार, 23 मार्च 2024 पृष्ठ:8 मूल्य: ` 1.50

अब होगी खुशियों की बात संजीवनी टुडे के साथ
जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ एवं नियुक्ति बधाई संदेश
मात्र 1100/- में
साईज 8X8 cm
संजीवनी टुडे

कोर्ट ने सुनाया फैसला: केजरीवाल 28 मार्च तक ईडी की रिमांड पर

28 मार्च तक ईडी की हिरासत में भेजे गए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल

■ संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 6 दिन की क्करिमांड पर भेजा गया है। गुरुवार को दिल्ली शराब घोटाला मामले में केजरीवाल को प्रवर्तन निदेशालय ने गिरफ्तार किया था।केजरीवाल को आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में 28 मार्च तक प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की हिरासत में भेज दिया।इससे पहले प्रवर्तन निदेशालय ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को राउज एवेन्यू अदालत में पेश किया था। प्रवर्तन निदेशालय ने निचली अदालत में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की 10 दिन की रिमांड की मांग की थी। अरविंद केजरीवाल की तरफ से कोर्ट में वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी पेश हुए। दोनों पक्षों को सुनने के बाद राउथ एवेन्यू कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। ईडी ने उनकी हिरासत का अनुरोध करते हुए अदालत से कहा कि अरविंद केजरीवाल आम आदमी पार्टी के अन्य मंत्रियों और नेताओं के साथ शराब घोटाले में मुख्य साजिशकर्ता थे। अरविंद केजरीवाल ने 'साउथ ग्रुप' और शराब घोटाले के आरोपियों के बीच बिचौलिए की भूमिका निभाई। ईडी ने कोर्ट को बताया कि अरविंद केजरीवाल को दिल्ली आबकारी नीति तैयार करने, लागू करने के लिए 'साउथ ग्रुप' से रिश्वत के रूप में कई करोड़ रुपये मिले।

मुख्यमंत्री नहीं बदला जाएगा: दिल्ली के स्पीकर

दिल्ली के स्पीकर रामनिवास गोयल ने कहा कि अगर क्के पास सबूत हैं तो उन्हें पेश करना चाहिए। बात रही हमारे पास विकल्प की तो हम सरकार चलाएंगे, आंदोलन करेंगे। अब ये जरूर देखना होगा कि सरकार कैसे चलाते हैं। पार्टी का निर्णय है कि मुख्यमंत्री नहीं बदला जाएगा। जेल से सरकार चलेगी।' क्या कभी जेल से सरकार चली है, इस पर गोयल ने कहा कि क्या कभी मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया गया है? अरविंद केजरीवाल ने पंजाब चुनाव के लिए 'साउथ ग्रुप' से कुछ आरोपियों से 100 करोड़ रुपये की मांग की थी। आम आदमी पार्टी एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक 'कंपनी' है, इसलिए 'कंपनी' के संचालन के लिए जिम्मेदार प्रत्येक व्यक्ति को जवाबदेह ठहराया जाएगा। मुख्यमंत्री केजरीवाल के वकील ने आबकारी नीति मामले में अदालत से कहा कि पैसे के लेन-देन की कड़ियां जोड़ने के वास्ते आगे की जांच किए जाने को गिरफ्तारी के लिए आधार नहीं बनाया जा सकता। वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने अदालत से कहा कि भारत के इतिहास में यह पहली बार है कि एक मौजूदा मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तारी की शक्ति, गिरफ्तारी की आवश्यकता के समतुल्य नहीं है, इस व्यक्ति (अरविंद केजरीवाल) को गिरफ्तार करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

केजरीवाल ने निराश किया: हेगड़े

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज और पूर्व सॉलिसिटर जनरल जस्टिस एन संतोष हेगड़े ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने निराश किया। 10 साल पहले इंडिया अगेंस्ट करप्शन के आंदोलन के दौरान जस्टिस हेगड़े, केजरीवाल के साथ रहे थे। जस्टिस हेगड़े ने कहा कि साफ दिखता है, जब कोई सत्ता में रहता है तो लालच हावी हो जाता है। मैंने सोचा था कि आप साफ-सुथरा प्रशासन करेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

बीजेपी को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी: शरद पवार

शरद पवार ने कहा कि विरोधियों की आवाज दबाने के लिए एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है, मैं इसका विरोध करता हूं। यह लोकतंत्र पर आया हुआ संकट है। केजरीवाल को गिरफ्तारी का फायदा मिलेगा और बीजेपी को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। पिछले दिल्ली विधानसभा चुनाव में बीजेपी सिर्फ दो सीट जितने में कामयाब हुई थी, लेकिन आगामी चुनाव में केजरीवाल 100 फीसदी सीटें जीतेंगे। सिंघवी ने अदालत ने कहा कि आम आदमी पार्टी के चार और वरिष्ठ नेताओं को गिरफ्तार किया गया है, (चुनाव के लिए) गैर बराबरी का माहौल पैदा करने का प्रयास किया जा रहा है। कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने कहा कि केजरीवाल को गिरफ्तार करके केंद्र सरकार ने बता दिया है कि सरकार बदलते ही कोई भी मुख्यमंत्री गिरफ्तार हो सकता है।

जयपुर में आप कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज

भाजपा ऑफिस में घुसने की कोशिश में थे, अंदर सीएम भजनलाल थे

■ संजीवनी टुडे

जयपुर। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तार के विरोध में आम आदमी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता देशभर में प्रदर्शन कर रहे हैं। जयपुर में भी पार्टी के कार्यकर्ता शुक्रवार को भाजपा ऑफिस के बाहर प्रदर्शन करने पहुंचे। जिन पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। इस दौरान कुछ कार्यकर्ताओं को चोट भी लगी। पुलिस ने 6 से ज्यादा लोगों को मौके से हिरासत में ले लिया है। कुछ कार्यकर्ताओं ने पार्टी ऑफिस में भी घुसने की कोशिश की। प्रदर्शन के समय ऑफिस में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, चुनाव प्रभारी विनय सहस्त्रबुद्धे सहित कई वरिष्ठ नेता मौजूद थे। आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नवीन पालीवाल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार लोकतंत्र को खत्म करने में लगी हुई है। लोकसभा चुनाव से पहले वह जनता की आवाज को दबाने की कोशिश में जुटी है। यही कारण है कि उन्होंने देश के सबसे ईमानदार मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जेल में डाल दिया है। जिसे आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ ही देश की जनता कभी स्वीकार नहीं करेगी। उन्होंने बताया कि आज हम इसके विरोध में

गांधीवादी तरीके से भारतीय जनता पार्टी मुख्यालय के बाहर प्रदर्शन करने पहुंचे थे। लेकिन राजस्थान में बीजेपी की सरकार के दबाव में पुलिस ने हम पर लाठीचार्ज कर तानाशाही की है। इसे अब राजस्थान और देश की जनता समझ चुकी है। हम ना दबेंगे ना झुकेंगे। बल्कि, बीजेपी को सबक सिखा के दम लेंगे। दोपहर 12:00 ज्योति नगर स्थित कार्यालय से आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता भाजपा मुख्यालय पर प्रदर्शन करने पहुंचे थे। इस दौरान पुलिस ने बैरिकेडिंग कर आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं को भाजपा मुख्यालय जाने से रोकने की कोशिश की। लेकिन जब कार्यकर्ता नहीं रुके तो पुलिस ने बल प्रयोग किया।

गहलोत बोले- मोदी-शाह के इशारे पर सीज हुए खाते

डोटासरा ने कहा, केजरीवाल ने कांग्रेस से गठबंधन किया, इसलिए रातों-रात जेल में डाला

■ संजीवनी टुडे

जयपुर। बैंक खाते फ्रीज करने के मुद्दे पर कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने कहा कि लोकसभा चुनाव से पहले आयकर विभाग ने कांग्रेस के बैंक खाते फ्रीज कर क्राइम किया है। देश में स्वतंत्र चुनाव को खतरे में डाल दिया है। कांग्रेस के बैंक खाते फ्रीज करने का मुद्दा गांव तक पहुंच चुका है। यह मुद्दा इनको (केंद्र सरकार-बीजेपी) ले डूबेगा। गहलोत पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के साथ प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में मीडिया से बातचीत कर रहे थे। गहलोत ने कहा- सीधे बैंक खाता फ्रीज कर दिया जाए, ऐसा प्रावधान ही नहीं है। 2017-18 में असेसमेंट हुआ। उस वक्त कांग्रेस को 199 करोड़ रुपए चंदे के मिले थे। उनमें से 14.40 लाख नकद जमा करवाए गए। पहले कानून था कि 20 हजार तक नकद दे सकते थे। फिर यह सीमा दो हजार कर दी गई। बदलाव के बारे में लोगों को पता नहीं था। उन्होंने नकद जमा करवा दिए। इसके लिए भी प्रावधान है। चूक हुई है तो 10 हजार की पेनल्टी लगा दीजिए। यह समझ से परे है कि कांग्रेस पार्टी के 115 करोड़ फ्रीज कर दिए। पार्टी के अलग-अलग बैंक खाते थे। उनमें हमने भी पैसा दिया था, वह सब फ्रीज कर दिया। गहलोत ने कहा- आज कांग्रेस सत्ता में

होती और इस तरह हो जाता तो आसमान सिर पर उठा लेते। देश नॉर्थ कोरिया और चीन की तरफ जा रहा है। चुनाव होंगे या नहीं होंगे। रूस, कोरिया की तरह होंगे, कोई नहीं कह सकता। पाकिस्तान में कैसा तमाशा हुआ। क्या यह देश उस दिशा में बढ़ रहा है। इनकम टैक्स का इतना बड़ा फैसला हो गया, 115 करोड़ फ्रीज हो गए। अगर हम यह कर देते तो इश्यू बना देते। जब देश बर्बाद हो जाएगा तो इतिहास माफ नहीं करेगा। देश आज बहुत खतरनाक दौर से गुजर रहा है। देश में लोकतंत्र की हत्या हो रही है। बिना कानून के राज के कोई सुरक्षित नहीं होता है। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा- जिस तरह रात को अरविंद केजरीवाल को अरेस्ट किया, वह पराकाष्ठा है। विपक्षी नेताओं को आचार संहिता में जेलों में डाला जा रहा है।

मोदी-शाह के इशारे पर इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने क्राइम किया

गहलोत ने कहा- इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने कांग्रेस के फ्रीज बैंक खातों से 115 करोड़ निकाल लिए। यह रेयर होता है। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने क्राइम किया है। किसके इशारे पर हुआ है, यह सब जानते हैं। नरेंद्र मोदी और अमित शाह के इशारे के बिना केंद्र में पत्ता भी नहीं हिलता है।अगर यही करना है तो मोदी जी डिक्लेयर ही कर दीजिए। कह दीजिए मैं ही पांच साल के लिए फिर चुना गया हूं। जो बोलेगा, उसे जेल में डाल दिया जाएगा। अब तो यही करना बच गया है।

सम्राट बोले-लालू ने किडनी के बदले रोहिणी को टिकट दिया

आरजेडी सुप्रीमो ने अपनी बेटी को भी नहीं छोड़ा; रोहिणी ने लिखा-जवाब जनता के बीच दूंगी

■ संजीवनी टुडे

पटना। लोकसभा चुनाव के ऐलान के साथ ही अब सियासी बयानबाजी तेजी है गई है। पक्ष विपक्ष एक दूसरे पर हमलावर हैं। इस बीच डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने राजद सुप्रीमो लालू यादव पर जोरदार हमला किया है। उन्होंने कहा कि टिकट बेचने में लालू यादव ने अपनी बेटी को भी नहीं छोड़ा। पहले अपनी बेटी की किडनी ली और उसके बाद लोकसभा चुनाव का टिकट दे दिया। डिप्टी सीएम ने कहा कि जो अपनी बेटी को भी नहीं छोड़ा हो, उसका नाम है लालू प्रसाद यादव। लालू यादव टिकट बेचने में माहिर खिलाड़ी हैं। सम्राट के बयान पर लालू की बेटी रोहिणी आचार्य ने जवाब दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया ड्ड पर लिखा- ओछी सोच और ओछे चरित्र वालों की हर ओछी बात का जवाब जनता के बीच, जनता जनार्दन की अदालत में दूंगी। सही-गलत का फैसला जनता करेगी। इधर, सम्राट के बयान पर राजद ने पलटवार किया है। राजद के राष्ट्रीय प्रवक्ता जयंत जिज्ञासु ने कहा कि सम्राट चौधरी के पास कोई लोक-लाज नहीं है। वे इतना नीचे गिर गए हैं कि माता-पिता की सेवा करने वाले और जान बचाने वाली संतान पर भी टिप्पणी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सम्राट चौधरी और उनके पिता को कैसे टिकट मिला था और वह मंत्री कैसे बने थे.. जरा यह भी अब वह बता दें।

रोहिणी और मीसा लड़ सकती हैं चुनाव

लालू यादव की दो बेटियां लोकसभा चुनाव लड़ने जा रही हैं। सूत्रों के मुताबिक, रोहिणी को पिछले एक महीने से छपरा, काराकाट, पश्चिमी चंपारण, मधेपुरा और पाटलिपुत्र जैसी सीटों से चुनाव लड़ने का ऑफर आया है। खुद लालू यादव बेटी को चुनाव लड़ाने के मूड में हैं। इसकी जानकारी रोहिणी आचार्य को भी दे दी गई है। हालांकि, लालू यादव ने रोहिणी के लिए सीट अभी फाइनल नहीं की है, लेकिन चर्चा है कि रोहिणी छपरा सीट से चुनाव लड़ना चाहती हैं। छपरा लालू यादव की कर्म भूमि है और रोहिणी भी अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत वहीं से करना चाहती हैं। वहीं लालू की बड़ी बेटी मीसा भारती पाटलिपुत्र सीट से चुनावी मैदान में उतरना चाहती हैं। पाटलिपुत्र सीट पर सबसे बड़ी दावेदारी महागठबंधन में लालू प्रसाद की बेटी मीसा भारती की है। वे दो बार यहां से बीजेपी के रामकृपाल यादव से चुनाव हार चुकी हैं। दो बार लालू प्रसाद ने उन्हें राज्यसभा भी भेजा है। इस सीट पर आरजेडी के दानापुर विधायक रीतलाल यादव और मनेर से आरजेडी विधायक भाई वीरेंद्र की भी दावेदारी रही। माले की दावेदारी भी इस पर रही। इस सब के बीच दानापुर विधायक रीत लाल यादव ने कहा है कि पाटलिपुत्र की सीट भाई-बहन के बीच फंसी हुई है। बहन चाह रही है कि भाई फैसला ले और भाई चाह रहा है बहन फैसला ले। बहन का फैसला मेरा फैसला होगा।

आरसीए का नाम हटा, रॉयल्स का रंग सजा

आईपीएल- ग्राउंड में तैयारी पूरी, जयपुर में मैच कल से

■ संजीवनी टुडे

जयपुर। सवाई मानसिंह स्टेडियम में लगी कुर्सियों से अब आरसीए का नाम हटा दिया दिया है। स्टेडियम अब राजस्थान रॉयल्स के गुलाबी रंग में रंगा है। सरकार से एमओयू रिन्यू नहीं होने के चलते 21 फरवरी को आरसीए से स्टेडियम और होटल सहित अन्य परिसंपत्तियों को खाली करा लिया गया था। इसके बाद सरकार ने राजस्थान रॉयल्स के साथ मिलकर आईपीएल के मैच कराने की घोषणा की थी। बीसीसीआई से परमिशन मिलने के बाद से स्टेडियम को तैयार करने का काम करीब एक महीने पूर्व शुरू हुआ था, जो अब पूरा

होने को है। स्टेडियम में आईपीएल की तैयारियां जोरों से चल रही है, लेकिन क्रीड़ा परिषद ने इस बार राजस्थान क्रिकेट संघ को आईपीएल से दूर करने की तैयारी कर ली है। सबसे बड़ा कारण सरकार और आरसीए के बीच खत्म हुआ एमओयू है। ऐसा पहली बार होगा जब आरसीए को दूर रखा जाएगा। आरसीए के मौजूदा कार्यकारी अध्यक्ष धनंजय सिंह खींवसर ने स्पष्ट किया कि उन्हें अभी तक कोई आमंत्रण नहीं मिला है। खेल विभाग की ओर से क्रीड़ा परिषद को जयपुर में रहने वाले पूर्व अर्जुन अवॉर्डी, द्रोणाचार्य अवॉर्डी, महाराणा प्रताप अवॉर्डी और ओलिंपिक पदक विजेता खिलाड़ियों को आमंत्रण भेजने के आदेश मिले हैं। सचिव सोहन लाल ने बताया कि वह पूर्व के सभी खिलाड़ियों से संपर्क कर रहे हैं। हर मैच में 20 खिलाड़ियों को मैच दिखाया जाएगा। क्रीड़ा परिषद के भवन की ओर वीवीआईपी ब्लॉक को तैयार किया गया है। यहां पर मैच के दौरान दोनों फ्रेंचाइजी के सदस्य व मालिक बैठगें। इसके अलावा कुछ वीआईपी के लिए अलग से बैठने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा साउथ ब्लॉक को इस बार एसी रूम में तब्दील किया गया है।

यूपी मदरसा बोर्ड कानून असंवैधानिक करार: हाईकोर्ट ने कहा

यह धर्मनिरपेक्षता का उल्लंघन; सर्वे में बिना मान्यता के चल रहे 8441 मदरसे मिले थे

■ संजीवनी टुडे

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने यूपी बोर्ड ऑफ मदरसा एजुकेशन एक्ट 2004 को असंवैधानिक घोषित कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि यह धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत का उल्लंघन है। इसके साथ ही यूपी सरकार को एक स्कीम बनाने को कहा है, ताकि मदरसों में पढ़ रहे छात्रों को औपचारिक शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जा सके। शुक्रवार को अंशुमान सिंह राठौड़ की याचिका पर जस्टिस विवेक चौधरी और जस्टिस सुभाष विद्यार्थी की खंडपीठ ने यह फैसला सुनाया। मदरसा परिषद के चेयरमैन बोले-फैसला बड़ा है...समीक्षा की जाएगी यह फोटो इफ्तिखार अहमद जावेद की है। इनका कहना है कि कोर्ट को समझाने में हमसे कहीं न कहीं चूक हुई है। यूपी मदरसा शिक्षा परिषद के चेयरमैन डॉ. इफ्तिखार अहमद जावेद ने कहा- कोर्ट के फैसले से आश्चर्य हुआ है। 2004 के एक्ट को असंवैधानिक बताया गया है। फैसला बड़ा है, इसकी समीक्षा की जाएगी। कोर्ट को समझाने में हमसे कहीं न कहीं चूक हुई है।

सर्वे में 8441 मदरसे बिना मान्यता मिले थे

10 सितंबर 2022 से 15 नवंबर 2022 तक मदरसों का सर्वे कराया था। इस टाइम लिमिट को बाद में 30 नवंबर तक बढ़ाया गया। इस सर्वे में प्रदेश में करीब 8441 मदरसे ऐसे मिले थे, जिनकी मान्यता नहीं थी। सबसे ज्यादा मुरादाबाद में 550, बस्ती में 350 और मुजफ्फरनगर में 240 मदरसे बिना मान्यता मिले थे। राजधानी लखनऊ में 100 मदरसों की मान्यता नहीं थी। इसके अलावा, प्रयागराज-मऊ में 90,

आजमगढ़ में 132 और कानपुर में 85 से ज्यादा मदरसे गैर मान्यता प्राप्त मिले थे। सरकार के मुताबिक, प्रदेश में फिलहाल 15 हजार 613 मान्यता प्राप्त मदरसे हैं। अक्टूबर 2023 में यूपी सरकार ने मदरसों की जांच के लिए ड्ड्ड का गठन किया था। ड्ड्ड मदरसों को हो रही विदेशी फंडिंग की जांच कर रही है। यूपी मदरसा बोर्ड एजुकेशन एक्ट 2004 उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पारित कानून था। जिसे राज्य में मदरसों की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए बनाया गया था। इस कानून के तहत मदरसों को न्यूनतम मानक पूरा करने पर बोर्ड से मान्यता मिल जाती थी। यूपी मदरसा बोर्ड एजुकेशन एक्ट का उद्देश्य मदरसों में शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारना और उन्हें आधुनिक शिक्षा प्रणाली से जोड़ना है। साथ ही छात्रों को रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करना भी है। हालांकि इस कानून का विरोध भी होता रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि यह कानून मदरसों को धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान करने से रोकता है।हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद मदरसों को मिलने वाली अनुदान की राशि (सहायता राशि) अब बंद हो जाएगी। यूपी सरकार के सर्वे में पाया गया था कि सरकार के पैसे से मदरसों में धार्मिक शिक्षा दी जा रही थी। जबकि कोर्ट ने इसे धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के खिलाफ माना है।

सिद्धू मूसेवाला केस में 27 तक टली सुनवाई: वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए हुई पेशी

■ संजीवनी टुडे

मानसा। पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड में आज शुक्रवार को मानसा कोर्ट में सुनवाई हुई। हत्या के चार मुख्य आरोपियों लॉरेंस बिश्नोई, जग्गू भगवानपुरिया, चरणजीत सिंह चेतन व जगतार सिंह की तरफ लगाई याचिका पर सुनवाई हुई। याचिका में आरोपियों ने खुद को बेकसूर बताया है। इस दौरान सिद्धू मूसेवाला के पिता बलकौर सिंह मानसा कोर्ट पहुंचे। कोर्ट ने 27 मार्च तक सुनवाई टाल दी है और सरकार को अपना पक्ष रखने के लिए कहा है। इस मामले की सुनवाई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हुई। सभी आरोपी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कोर्ट के सामने पेश हुए। वहीं, लॉरेंस बिश्नोई ड्रग्स मामले में गुजरात की जेल में बंद है। हालांकि पिछली तारीख पर न्यायाधीश के छुट्?टी पर होने के कारण सुनवाई आज तक के लिए टाल दी गई थी। वहीं, पुलिस अधिकारियों के माने तो केस काफी मजबूत है। पुलिस की तरफ से तथ्यों सहित पक्ष को रखा जाएगा। 29 मई 2022 की शाम को मानसा के जवाहरके गांव में 6 शूटरों ने गोलियां मारकर मूसेवाला की हत्या कर दी थी। तब मूसेवाला की उम्र 28 साल थी। इस हत्या की जिम्मेदारी कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस गैंग ने ली। कनाडा में बैठे गैंगस्टर गोल्डी बराड़ ने इस पूरी साजिश को अंजाम दिया। जिसमें लॉरेंस का भाई अनमोल और भांजा सचिन थापन भी शामिल था। लॉरेंस ने अपने विवादित इंटरव्यू में भी मूसेवाला के कत्ल का जिक्र किया था। इसके बावजूद लॉरेंस बिश्नोई, जग्गू भगवानपुरिया, चरणजीत सिंह चेतन व जगतार सिंह की तरफ से एप्लीकेशन कोर्ट में दाखिल की गई, जिसमें इन्होंने मूसेवाला की हत्या में उनका हाथ ना होने की बात कही। पुलिस ने इस मामले में 35 आरोपियों को नामजद किया है। इनमें से 4 की मौत हो चुकी है। हत्या के बाद से माता-पिता बेटे को इंसाफ दिलाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। हत्या के बाद अब तक 6 गाने रिलीज हो चुके हैं। तीन सप्ताह पहले ही ड्रिपी गीत रिलीज हुआ। जिसे तीन सप्ताह में करीब 2.68 करोड़ लोग देख चुके हैं। इससे पहले वॉच-आउट, चोरनी, मेरा नां, वार और एसवाईएल रिलीज हो चुके हैं। एसवाईएल गीत को भारत सरकार ने देश में बैन करवा दिया था।

पांच सपेरों को भी पहले ही जमानत मिल चुकी

एल्विश को मिली जमानत:17 मार्च से जेल में बंद थे, ईश्वर-विनय को भी 50-50 हजार के बॉन्ड पर मिली बेल

■ संजीवनी टुडे

नोएडा। एल्विश यादव को गौतमबुद्ध नगर जिला कोर्ट से जमानत मिल गई है। 17 मार्च से वो जेल में बंद थे। उनको 50 हजार रुपए के बेल बॉन्ड पर बेल मिली है। हालांकि, स्पेशल एनडीपीएस एक्ट 29 अभी नहीं हटी है, जिसमें बड़ी सजा का प्रावधान है। बता दें इस मामले में स्टिंग के बाद पकड़े गए राहुल और पांच सपेरों को भी पहले ही जमानत मिल चुकी है। वकीलों की हड़ताल के चलते बीते चार दिनों से सुनवाई नहीं हो सकी थी। बुधवार को पुलिस ने इस मामले में एल्विश के दोस्त विनय और मीडिएटर ईश्वर को गिरफ्तार कर एनडीपीएस की धाराओं में जेल भेजा था। डीसीपी क्राइम ने बताया कि था विनय से डिमांड की जाती थी, जिसके लिए विनय ईश्वर से संपर्क करता था और ईश्वर राहुल का दोस्त है। एफएसएल रिपोर्ट में क्या था जिससे बढ़ी एनडीपीएस एक्ट स्टिंग के दौरान राहुल और सपेरों के पास से 20 एमएल वेनम मिला था। पुलिस ने इस वेनम को जयपुर की एफएसएल लैब में भेजा। वहां की रिपोर्ट में ये जहर सांप की कोबरा प्रजाती करैत का बताया गया। जिसके प्रयोग से मौत और पैरालाइसिस भी हो सकता है। इस जहर में मॉर्फिन का सब्सटेंट होता है।

अब फाजिल पुरिया पुलिस के रडार पर

इस पूरे मामले में हरियाणवी गायक फाजिल पुरिया पर पुलिस का शिकंजा कस सकता है। इस मामले में दावा किया गया था कि फाजिलपुर गांव में कई रेव पार्टी का आयोजन किया गया था। इसमें सांपों के साथ एल्विश यादव ने कई वीडियो शूट कराए थे। फाजिलपुर गांव के इन वीडियो को भी पुलिस ने एल्विश की गिरफ्तारी का आधार बनाया था। इसलिए पुलिस ने रिपोर्ट को काफी ध्यान से अध्ययन के बाद एल्विश पर एनडीपीएस एक्ट लगाया। एल्विश के वकील प्रशांत राठी ने बताया कि हमे पूरी उम्मीद है एल्विश को कल जमानत मिल जाएगी। जिनके पास से वेनम , सांप बरामद हुआ यानी राहुल और पांच सपेरे सभी को जमानत मिल चुकी है। एफएसएल रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने एल्विश पर एनडीपीएस एक्ट लगाया। लेकिन ये वेनम राहुल और सपेरों से मिला था। एल्विश राहुल और सपेरों को नहीं जानता कोई सीधा लिंक पुलिस के पास नहीं है।

खबरें फटाफट

घायल हिरण को पहुंचाया रेस्क्यू सेंटर

संजीवनी टुडे

धनाऊ । चोहटन सड़क मार्ग पर सनाऊ फांटा के पास कल रात को अज्ञात वाहन की टकर से घायल हिरण को तड़पता देख 108 पायलट गणपत सिंह सोढा , ईएमटी रामजीवन बिश्नोई ने 108 में बिठाकर धनाऊ लाए वहा पर प्राथमिक उपचार कर वहा से निजी वाहन से अशोक ढाका, कृष्ण खीचड़, मनोहर शर्मा की वह 108 स्टाफ की मदद से कातरला रेस्क्यू सेंटर पहुंचाया।

स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत सितोलिया एवं मेहन्दी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

संजीवनी टुडे

मालपुरा (टोंक) ।जिला निर्वाचन अधिकारी के आदेश अनुसार सहायक रिटर्निंग ऑफिसर (एसडीएम) मालपुरा के निर्देश पर शुक्रवार को रेखा देवी मेमोरियल नर्सिंग प्रशिक्षण संस्थान में स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत सितोलिया व मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संस्थान के डायरेक्टर डॉक्टर अंकित जैन, स्टाफ सदस्य एवं छात्र- छात्राओं ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत सभी युवा मतदाताओं को लोकसभा चुनाव में मतदान हेतु जागरूक किया गया। साथ ही गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम में स्वीप टीम सदस्य बाबूलाल यादव, अंकित पारीक ने चुनाव आयोग से संबंधित प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन कर सभी को मतदान की शपथ दिलाई।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में विदाई समारोह आयोजित

संजीवनी टुडे

रेनवाल मांजी। कस्बे के समीपवर्ती ग्राम कौशल्या दास की बावड़ी में संचालित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में विदाई समारोह का आयोजन हुआ। समारोह का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। विद्यालय प्रबंधन समिति अध्यक्ष शिवपाल खंडेलवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि जूनियर कक्षाओं के छात्र-छात्राओं ने कक्षा 8वीं के छात्र-छात्राओं को मोली का धागा बांध कर तिलक कर मुंह मीठा करवाकर विदाई दी। प्रधानाध्यापिका रुकमणी मीणा ने छात्र-छात्राओं को बोर्ड परीक्षा में उच्च अंको के साथ सफल होने के गुर बताए तथा उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस दौरान अध्यापिका सुमन शर्मा, अल्का जैन, तरुणा अग्रवाल, अन्नु बैरवा, सुनीता चौधरी व ज्योति शर्मा मौजूद रही।

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला पुलिस अधीक्षक ने किया अति. सवेदनशील बूथों का निरीक्षण किया

संजीवनी टुडे

पिण्डवाडा। सिरोही। जिला निर्वाचन अधिकरी शुभम चैधरी, जिला पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार ने लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों के संबंध में अति संवेदनशील बूथों यथा नया सानवाडा, कोजरा, सरूपगंज, नितोडा, ईसरा एव आबूरोड तहसील के किवरली का निरीक्षण किया तथा संबंधित बीएलओ, सुपरवाईजर, पटवारी एवं ग्राम विकास अधिकारी को चुनाव संबंधी दिशा निर्देश दिए गये तथा सरूपगंज बूथ पर बीएलओ व सुपरवाईजर अनुपस्थित पाये गये जिन पर कार्यवाही के निर्देश संबंधित अधिकारी को दिए। निरीक्षण के वक्त आबूपर्वत के उपखंड अधिकारी आबूपर्वत व पिण्डवाडा विकास अधिकारी महीप सिंह एवं रतन सिंह नायब तहसीलदार मौजूद रहें।

शहीदों की याद में रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन, 81 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

संजीवनी टुडे

जल संरक्षण पर विचार संगोष्ठी हुई आयोजित

मालपुरा (टोंक)। मानव मित्र मण्डल सेवा संस्थान मालपुरा के तत्वावधान में कल शुक्रवार को अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के शहादत दिवस के पूर्व दिवस पर दितीय विशाल रक्तदान शिविर एवं विश्व जल दिवस के अवसर पर ''जल संरक्षण की आवश्यकता व महत्व'' विषय पर विचार संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में बतौर अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकुमार कस्वां, व तहसीलदार राहुल पारीक ने शिविर में पहुंचकर अमर शहीदों के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर पुष्पांजलि अर्पित की तथा शिविर में रक्तदान कर रहे रक्तदाताओं की होंसला अफजाई की। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकुमार कस्वां ने युवाओं का हौंसला बढ़ाते हुए कहां कि भारत की आजादी में भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता, उनकी याद में किये गये रक्तदान से किसी की जान बचेगी ओर यही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। तहसीलदार राहुल पारीक ने कहां कि रक्तदान महादान है, इससे बड़ा पुण्य का कार्य नहीं हो सकता। संस्थान के सदस्यों द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। संस्थान सदस्य पदमचंद वर्मा ने बताया कि रामपाल बल्ड बैंक सेंटर के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 81 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। सचिव संजय पाराशर ने बताया कि रक्तदान करने वाले प्रत्येक रक्तदान करने वाले प्रत्येक रक्तदाता को उपहार स्वरूप पानी का केम्पर व प्रशस्ति पत्र दिया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्व जल दिवस के अवसर पर जल सरंक्षण की आवश्यकता व महत्व विषय पर विचार संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें सभी वक्ताओं द्वारा जल संरक्षण पर विचार रखे गये। संस्थान संस्थापक/अध्यक्ष नोरतमल वर्मा ने दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाले पानी की बचत करके भी हम जल की बर्बादी रोक सकते है

यह कार्य केवल सरकार या प्रशासन के बूते नहीं किया जा सकता है इसके लिये जनभागीदारी की आवश्यक्ता है इसलिये शासन-प्रशासन द्वारा स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ मिलकर जल संरक्षण और पौधारोपण को लेकर जागरुकता अभियान चलाने होंगे ताकि लोग जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण को अपनी जिम्मेदारी समझकर इस मुहिम में सहयोग कर सके। विचार संगोष्ठी में संस्थान उपाध्यक्ष सामाजिक कार्यकर्ता नरेन्द्र कुमार वर्मा ने जल संरक्षण की महता भूजल के गिरते स्तर पर चिन्ता जताते हुए कहा कि क्षेत्र में हर वर्ष 2 से 3 मीटर भूजल का स्तर गिरना बेहद चिन्ता का विषय है यदि इसे समय रहते नहीं रोका गया तो आने वाले समय में हालात बहुत भयावह होंगे। इसके लिये हमें भूजल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करना होगा। वर्षा के जल को संरक्षित कर जल संकट की समस्या पर काबू पाया जा सकता है। इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष नोरत मल वर्मा, सचिव संजय कुमार पाराशर, उपाध्यक्ष नरेन्द्र कुमार वर्मा, सदस्य अशोक कुमार साहू एडवोकेट ,पदमचंद वर्मा,समाज सेवी उमाशंकर ठागरिया, तेजपाल गोयर, गजेन्द्र बोहरा, अनीश कुमार जैन एडवोकेट,रजनीश जैन मैदवास्या, नेहरू नवयुवक मण्डल बृजलालनगर सचिव गिरधारी ठागरिया, कैलाश चौधरी, बिहारी सिंह, सोनू नामा,जितेन्द्र सुंकरिया, नैना वर्मा, पिंकी वर्मा, अन्नु मेघवंशी, राजकुमार वर्मा,पंकज, निर्मल कुमार वर्मा, गोविन्द फुलवारिया आदि सहित अन्य स्वयंसेवकों ने रक्तदान शिविर में रक्तदान भी किया एवं सेवा कार्य किया साथ ही जल संरक्षण के लिए जागरुकता पम्पलेट वितरण भी किए।

अज़मेर डिस्कॉम के अभियंताओ की पोस्टिंग व सिनियरिटी में बरती जा रही अनियमितताएँ

संजीवनी टुडे

अजमेर। विधुत विभाग राजस्थान ने अज़मेर डिस्कॉम में सीनियरिटी नियम कायदे कानूनों को ताक पर रख जिले के एक मात्र किशनगढ़ विधानसभा में अभियन्ताओ कि सूची में काफी पीछे कनिष्ठ अभियंता कों पिछले 2 साल से बिजली विभाग सहायक अभियंता का चार्ज दिया हुआ है जो कि अज़मेर जिले में एक मात्र है प्रकरण है जबकि जिले में पर्याप्त सहायक अभियंता मौजूद है। पोस्टिंग को लेकर अब इस तरह की मांग अन्य पूरे अज़मेर डिस्कॉम जैसे नागौर, भीलवाड़ा व अन्य सभी जिलों में उठने लगे है। अब देखना ये होगा क्या डिस्कॉम प्रशासन व ऊर्ज़ा मंत्री ऐसे प्रकरण में क्या एक्शन लेते है। जबकि उक्त कनिष्ठ अभियंता को किशनगढ़ कें जनप्रतिनिधि यहाँ से हटाने की डिस्कॉम के एमडी व सचिव कों शिकायत कर चुके है।

दंत चिकित्सा शिविर आयोजित,दंत स्वास्थ्य के प्रति किया जागरूक

संजीवनी टुडे

जयपुर। गौतम हॉस्पिटल रिसर्च सेंटर, सेंटवेव ऑर्गेनाइजेशन एवं लीनेस क्लब ड्रीम प्लैनेट के संयुक्त तत्वाधान में वर्ल्ड ओरल हेल्थ सप्ताह के तहत गौतम अस्पताल में दंत चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। दंत रोग विशेषज्ञ डॉक्टर महिमा ने दातों में होने वाली समस्याओं के कारण व निदान के बारे में बात की एवं ओरल हाइजीन की कमी के कारण संपूर्ण शरीर में होने वाली बीमारियों के बारे में अवगत कराया एवं शिविर में आये सभी लोगों का दन्त परिक्षण किया। सेंटवेव की संस्थापक अध्यक्ष शिवाली गुप्ता ने मंच का संचालन करते हुए बताया कि शरीर के साथ दंत स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूकता होनी चाहिए। गौतम अस्पताल की सीईओ राजश्री गौतम ने वर्कशाप में हुई गतिविधियों के विजेताओं को सम्मानित किया। कार्यक्रम में अंजना जैन, डॉ अनीता गौतम, डॉक्टर मेधावी गौतम, डॉक्टर दौलत राम माल्या, प्रीति गोयल, राज अग्रवाल, मंजू मित्तल, मनदीप नारंग, प्रमिला पारीक, सुनीति गोयल गणमान्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। प्रांतीय अध्यक्षा अनुभा जैन एवं ड्रीम प्लैनेट अध्यक्षा नीलम जैन ने उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

चेन्नई से जालोर के लिए शुरू होगी 6 माह में नई रेल सेवा

केंद्रीय रेल मंत्री ने दिया आश्वासन, चेन्नई प्रवास पर गए भाजपा प्रत्याशियों ने की मुलाकात

संजीवनी टुडे

चेन्नई/ मोदरान। लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा ने तैयारी तेज कर दी है। इसी सिलसिले में भाजपा के जालोर सिरोही लोकसभा के प्रत्याशी लुंबाराम चौधरी, विधानसभा मुख्य सचेतक सहित राजस्थान के कई प्रत्याशी और नेता इन दिनों चेन्नई प्रवास पर हैं।

इस दौरान उन्होंने वहां राजस्थान के प्रवासी बन्धुओं से मुलाकात की। साथ ही उन्हें पीले चावल दिए और राजस्थान आकर मतदान करने की भी अपील की। मुलाकात के दौरान प्रवासी समुदाय के लोगों ने भाजपा प्रत्याशियों व नेताओं से चेन्नई से जालोर-सिरोही के बीच रेल सेवा चालू करने की मांग की। इसके बाद प्रवासियों के साथ भाजपा नेताओं ने चेन्नई रेल महाप्रबंधक ऑफिस में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात की और रेल सेवा शुरू करने की मांग की। इसके बाद केंद्रीय मंत्री ने 6 माह में नई रेल सेवा चैन्नई से जालोर होकर रेल सेवा शुरू करने का आश्वासन दिया। प्रवासी जालम सिंह राठौड़ मोदरान ने मोदरान न्यूज को बताया कि लोकसभा चुनावों को लेकर अभी जालोर-सिरोही सहित राजस्थान के कई प्रत्याशी समेत राज्य के मंत्री व वरिष्ठ नेता अन्य राज्यों में प्रवास पर हैं। इस दौरान सोमवार से चेन्नई में प्रवास पर हैं।

चेन्नई में जालोर-सिरोही के प्रवासियों से मुलाकात कर लोकसभा चुनावों में अपने प्रदेश राजस्थान घर व गांव आकर अधिक से अधिक मतदान करने के लिए पीले चावल देकर अपील की गई मुलाकात के दौरान एक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इसमें हंसराज राजपुरोहित, जीतू लोहार और भारतीय जनता पार्टी चेन्नई सेंट्रल जिला सचिव पवन कुमार, राजस्थानी प्रवासी युवा मंडल के डार्विन शर्मा मोदरान, जालम सिंह राठौड़ मोदरान, जेसाराम माली, कल्याण सिंह व रणजीत सिंह समेत कई प्रवासी मौजूद रहे।

धनाऊ तहसीलादार अमीन खान का कार्यालयों में लगातार निरीक्षण जारी

संजीवनी टुडे

धनाऊ। शुक्रवार को धनाऊ क्षेत्र के सदराम की बेरी उप स्वास्थ्य केंद्र, जानियों की बस्ती आगनवाड़ी केंद्र में संचालित सब सेंटर , जाखड़ो का तला में मॉडल आंगनवाड़ी का निरीक्षण किया गया वही सदराम की बेरी एएनएम अनुपस्थित पाई गई वही केंद्र बंद पाया गया, वही जानियो की बस्ती सब सेंटर भवन नही होने पर आगनवाड़ी में संचालित हो रही है वहा जाकर एएनएम स्वास्थ्य कर्मी की उपस्थिति जाँच कर सभी व्यवस्थाओ का जायजा लिया, सब सेंटर पर होने वाली जाँच, उपलब्ध दवाईया, ओपीडी रजिस्टर, टीकाकरण, व आयुष्मान कार्ड वितरण की जानकारी लेकर निरिक्षण कर मौके पर ही ओ डी के कलेक्ट एप पर ऑनलाइन किया गया वही जाखडो का तला मॉडल आँगन वाड़ी केंद्र पर अनियमिता पाई गई नामांकित 49 बच्चो मेसे मौके पर एक भी बच्चा उपस्थित नहीं मिले न ही आवश्यक रिकॉर्ड उपलब्ध पाए गए, मौके पर सहायिका अनुपस्थित पाई गई आँगन वाड़ी केंद्र पर साफ सफाई का पूर्ण अभाव पाया गया।

भूगोल परिषद द्वारा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन

संजीवनी टुडे

राजगढ़ । राजकीय महाविद्यालय राजगढ (अलवर) में भूगोल परिषद द्वारा वार्षिक गतिविधियों के विजेताओं को पुरस्कार वितरण के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम की अधिकारी प्रो. चित्रा मीना ने बताया कि पोस्टर प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सत्र 2023-24 के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साह बढाया गया है। प्राचार्य डॉ. के. एल. मीना ने स्नातकोत्तर भूगोल के विद्यार्थियों को भूगोल विषय के अध्ययन रोजगार की संभावनाओं पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि कौशलवर्धन से भूगोल में रोजगार की अपार संभावना है। विभागाध्यक्ष डॉ. जगफूल मीना ने भूगोल परिषद की वार्षिक गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया साथ ही भूगोल विभाग के ससाधनों की मांग रखी। कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन डॉ चिरंजी लाल रैगर ने किया। कार्यक्रम के दौरान प्रिंस कुमार मीना एवं छात्र भारती जोशी ने सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में डॉ. मीनाक्षी मीना, डॉ. आंचल मीना, डॉ. शीला बसवाल, डॉ. रजनी मीना, आयुषी गुप्ता, संजय बमनावत, रचना जैन आदि संकाय सदस्य एव भूगोल विभाग के छात्र उपस्थित रहे।

लोकतंत्र के रंगोत्सव कार्यक्रम का हुआ आगाज जिला कलेक्टर ने दी हरी झंडी

संजीवनी टुडे

पिण्डवाडा/सिरोही। स्थानीय पंचायत समिति सभागार में विकास अधिकारी महीप सिंह जागावत के नेतृत्व में राजीविका द्वारा लोकतंत्र का रंगोत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमे जिला निर्वाचन अधिकारी (कलेक्टर) शुभम चैधरी ने स्वयं सहायता समूहों की महिलाओ को रंग , पोस्टर दे कर हरी झंडी दी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि आगामी लोकसभा चुनाव में सभी गांवों में शत-प्रतिशत मतदान हेतु घर-घर जाकर टीम लोगो को प्रेरित करे, सभी ग्रामीणों को निर्वाचन से संबंधित एप डाउनलोड करवाकर उपयोग करने हेतु बताया, जिला कलेक्टर चैधरी ने अपील की लोकतंत्र के रंगोत्सव कार्यक्रम को धूमधाम से मनाए स्थानीय परंपरा के अनुसार घर-घर पीले चावल बाटे और मतदान महापर्व पर मतदान करवाएं। कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार बेनीवाल, सहायक रिटर्निंग अधिकारी आबुपर्वत गौरव सालुंखे, जिला परियोजना प्रबंधक राजीविका डॉ केदार प्रसाद वैष्णव, सहायक विकास अधिकारी जितेंद्र सिंह, जिला प्रबंधक सूर्यप्रकाश ब्लॉक परियोजना प्रबंधक मनोज कुमार, समन्वयक राम प्रसाद मीना, मनोज खत्री सहित पंचायत समिति एवं राजीविका कार्मिक और महिलाए उपस्थित रही ।

निर्धारित समयावधि में पूर्ण करें निर्वाचन कार्य: जिला निर्वाचन अधिकारी

संजीवनी टुडे

टोंक। लोकसभा आम चुनाव 2024 के अंतर्गत जिले में 26 अप्रैल को होने वाले मतदान को निष्पक्षता, स्वतंत्रता एवं शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. सौम्या झा की अध्यक्षता में एवं पुलिस अधीक्षक संजीव नैन की उपस्थिति में कार्य संपादन के लिए गठित प्रकोष्ठ प्रभारियों की बैठक शुक्रवार को कलेक्टर कक्ष में आयोजित हुई। जिला निर्वाचन अधिकारी ने विभिन्न प्रकोष्ठों द्वारा अब तक किए गये कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि सभी प्रकोष्ठ प्रभारी भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित समयावधि में निर्वाचन संबंधी कार्य पूर्ण करना सुनिश्चित करें। बैठक में जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी प्रकोष्ठ प्रभारी अधिकारियों से इलेक्शन प्लान के अनुसार कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि होम वोटिंग और वेब कास्टिंग सहित अन्य व्यवस्थाएं भली-भांति संपन्न हो सके, इसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न करवाया जाएं। उन्होंने निर्वाचन कार्य से जुड़े कार्मिकों के प्रशिक्षण को भी महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि सभी कार्य भारत निर्वाचन आयोग द्वारा तय अवधि में पूर्ण किए जाएं।

उन्होंने चुनाव संचालन एवं मॉनिटरिंग प्रकोष्ठ के प्रभारी अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुरेश चौधरी एवं सह प्रभारी नितेश कुमार जैन, डाकमत पत्र प्रकोष्ठ प्रभारी जावेद अली, मतपत्र व्यवस्था के लिए कोषाधिकारी हरीश लालावत, रूटचार्ट एवं नक्शा व्यवस्था अनिता खटीक एवं उपखंड अधिकारी पीपलू कपिल शर्मा, परिवहन व्यवस्था के लिए डीटीओ संपत राम वर्मा, वेबकास्टिंग के संदीप कुलश्रेष्ठ एवं एमसीएमसी के लिए अपूर्व शर्मा से उनके प्रकोष्ठ से प्रगति के संबंध में जानकारी ली एवं भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के तहत कार्य करने पर जोर दिया।

होली व धुलंडी के त्यौहार को शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाने की अपील

संजीवनी टुडे

चाकसू। शुक्रवार को होली व धुलंडी के त्यौहार को शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाने को लेकर चाकसू पुलिस थाने में शुक्रवार को एसीपी सुरेंद्र सिंह व थानाधिकारी कैलाश दान की मौजूदगी में सीएलजी सदस्यों की बैठक आयोजित हुई है । वही इस बैठक में हिन्दू पर्व होली के त्यौहार एवं मुस्लिम समाज के रमजान पर्व को लेकर कानून व शांति व्यवस्था पर चर्चा की गई। इस दौरान पुलिस अधिकारियों ने कहा कि किसी भी पर्व का मनाने का आनन्द भाईचारे व सौहार्द पूर्ण माहौल में आता है। उन्होंने सीएलजी सदस्यों से पर्व पर शांति बनाए रखने में सहयोग की अपील की। साथ हीं बैठक में उपस्थित ग्रामीणों को क्षेत्र में आदर्श आचार संहिता की नियमों की जानकारी दी गई है और कहा कि संवेदनशील जगहों पर पुलिस की निगरानी रखी जायेगी वही साथ ही गश्ती दल नियुक्त किए जाएंगे। सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाह फैलाने वालों पर प्रशासन की पैनी नजर रहेगी, समाज को जागरूक रहने की जरूरत है। सोशल मीडिया पर नजर रखी जायेगी और कोई भी बात पोस्ट करने से पहले तथ्यों की जांच कर लें और असामाजिक तत्वों पर पुलिस की निगरानी रहेगी। जोर जबरदस्ती किसी को रंग न लगायें। कोई भी अप्रिय घटना की सूचना मिले तो अविलंब थाना को सूचना दी जाएें। बैठक में सीएलजी सदस्य कई जनप्रतिनिधि मौजूद रहे है ।

'रामदरश मिश्र: कथा और कविता की शती उपस्थिति' विषय पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

संजीवनी टुडे

गांधीनगर। गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की ओर से 'रामदरश मिश्रः कथा और कविता की शती उपस्थिति' विषय पर 21 और 22 मार्च 2024 दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के बीज वक्ता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. वशिष्ठ अनूप ने कहा कि रामदरश मिश्र जीवंत और जीवित इतिहास के सशक्त उदाहरण है।

वह किसी धरा में सीमित कर देने वाले लेखक नहीं है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमाशंकर दूबे ने कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की तरह रामदरश मिश्र की कविताएं भी हुंकार भरती है। उन्होंने रामदरश मिश्र के 7 दशक के साहित्यिक जीवन को प्रेरणादायक बताया। इस अवसर पर उन्होंने हिंदी के महत्व को रेखांकित करते हुए पं. मदन मोहन मालवीय पर स्वरचित पंक्तियों से युवाओं को संबोधित किया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि रामदरश मिश्र की पुत्री और दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर स्मिता मिश्र ने कहा कि पिताजी लोकधर्मी चरित्र के धनी है। उन्होंने कहा कि पिताजी के साहित्य रचना में माताजी का भी योगदान रहा है। संगोष्ठी का स्वागत उद्बोधन सीयूजी के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. संजीव दुबे ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए संयोजक डॉ. गजेन्द्र मीणा ने कहा कि मिश्र ने समाज में चेतना जागृत करने का कार्य किया है। उनका लेखन शाश्वत है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. सुनील कुमार ने आभार व्यक्त किया। डॉ. प्रेमलता देवी ने मंच संचालन किया।

हर कार्यकर्ता को लुंबाराम बन कर चुनाव लड़ना है : प्रत्यशी लुम्बाराम चौधरी

भाजपा जिला सिरोही होली समय मिलन समारोह आयोजित हुआ

संजीवनी टुडे

पिण्डवाडा/सिरोही। भाजपा जिला सिरोही होली स्नेह मिलन समारोह में जालौर सिरोही लोकसभा प्रत्याशी लुम्बाराम चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने मुझ जैसे बूथ स्तर के कार्यकर्ता को सांसद का टिकट देकर कार्यकर्ता का सम्मान किया हैम्अब हमारी जिम्मेदारी है कि जालोर-सिरोही लोकसभा सीट को भारी मतों विजय बनाना है। उन्होंने कहा कि हर कार्यकर्ता को लुम्बाराम बन चुनाव लड़ना हैम्प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता को अगले एक महीने तक कड़ी मेहनत करते हुए पार्टी के पक्ष में माहौल बनाना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अबकी बार 400 पार की संकल्प से सिद्धि के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को पूरी तन्मयता से जुटना है। लोकसभा संयोजक नारायण सिंह देवल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने पिछले 10 सालों में राष्ट्रहित और जनहित में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की है, उसके लिए अबकी बार 400 पार के लक्ष्य को संधान करने के लिए हम सबको मिलकर कमल के फूल को प्रत्याशी मानते हुए काम करना होगा। हर कार्यकर्ताओं को गांव गांव तक पहुंचना है और मोदी जी के द्वारा करवाए गए कार्यों को लोगों तक बताना है जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी ने बताया कि लोकसभा प्रत्याशी लुंबाराम चौधरी 3 अप्रैल को जालोर में नामांकन भरेंगे। नामांकन सभा में आधिकारिक संख्या में उपस्थित होने का आह्वान करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथ मजबूत करने की बात कही। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी रोहित खत्री ने बताया कि लोकसभा प्रत्याशी लुम्बाराम चौधरी ने कार्यकर्ताओं के साथ हर्लोउल्लास के साथ पुष्प होली खेली और सभी कार्यकर्ताओं को होली की शुभकामनाएं दी। पूर्व विधायक जगसीराम कोली,महंत तीर्थगिरी,महिला मोर्चा प्रदेशाध्यक्षा रक्षा भंडारी,जिला प्रमुख अर्जुन पुरोहित,भाजपा वरिष्ठ नेत्री तारा भंडारी,पूर्व जिलाध्यक्ष नारायण पुरोहित, वरिष्ठ भाजपा नेता वीरेन्द्रसिंह चौहान,किसान मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष गणपत सिंह राठौड़,भंवर सिंह चौहान ने विचार रखते हुए कहा कि हर पदाधिकारी कार्यकर्ता को चुनाव में लगना है और हर बूथ तक को पहुंचना है। कार्यक्रम का मंच संचालन जिला महामंत्री दीपाराम पुरोहित ने किया। होली स्नेह मिलन कार्यकर्ता सम्मेलन में भाजपा के मंडल अध्यक्ष,जनप्रतिनिधि,विस्तारक,पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे।

खबरें फटाफट

बिहार समाज ने हर्षोल्लास के साथ मनाया बिहार दिवस

संजीवनी टुडे

जयपुर। बिहार समाज संगठन की ओर से राजभवन में बिहार दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बिहार समाज के पदाधिकारी , कार्यकर्ताओं, शिक्षाविद एवं समाजसेवी समेत बड़ी संख्या में लोग राज भवन में उपस्थित हुए। कार्यक्रम की शुरुआत राज्यपाल कलराज मिश्र की उपस्थिति में राष्ट्रीय गान के साथ हुई। इसके बाद संगठन के सभी सदस्यों ने अपना परिचय दिया। राज्यपाल ने अपने संबोधन मे बिहार को सर्व प्रतिभा संपन्न राज्य बताया। उन्होंने बिहार के चाणक्य के सिद्धांत, नालंदा विश्वविद्यालय, चाणक्य , अशोक सम्राट, चंद्रगुप्त मौर्य के शासन समेत बिहार से जुड़ी विश्व धरोहरों की चर्चा की। उन्होंने सभी को बिहार दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के दौरान संगठन के अध्यक्ष पवन शर्मा ने राज्यपाल का स्वागत उन्हे स्मृति चिन्ह प्रदान कर एवम शॉल ओढ़ाकर किया। उन्होंने संगठन की ओर से समाज की एकजुटता एवम उनके वेलफ़ेयर मे किए जाने वाले कार्यों की चर्चा की। कार्यक्रम के समापन पर महामंत्री चंदन मंडल ने सभी सदस्यों को संगठन की ओर से मोमेंटो देकर बिहार दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम में उपस्थित सदस्य पुरूषोत्तम झा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष शशि शंकर झा , संगठन मंत्री एसके सिन्हा, उपाध्यक्ष संजीव मिश्रा, अनूज मेहता, एस एन प्रसाद, संजय शुक्ला, बजरंगी झा झा, चंदन रावत समेत अन्य सदस्यों ने समाज के उत्थान के लिए अपने विचार रखे। बिहारवासियों में खुशी माहौल है जयपुर में पहली बार राजभवन में बिहार दिवस समारोह मनाया गया है।

ढाई आखर प्रतियोगिरता विजेताओं का सम्मान

संजीवनी टुडे

जयपुर। डाक विभाग के जयपुर नगर मंडल द्वारा राष्ट्रीय स्तर की पत्र लेखन प्रतियोगिता' ढाई आखर एवं अंतराष्ट्रीय स्तर की यू.पी.यू. पत्र लेखन प्रतियोगिता 2023 के विजेता प्रतिभागियों का, प्रवर अधीक्षक मोहन सिंह मीना ने शुक्रवार को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया ऋढ्ढढाई आखरङ्क प्रतियोगिता, अंतर्देशीय पत्र कार्ड श्रेणी में टेगौर विद्या भवन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मानसरोवर की छात्रा कु. हिमांशी जैन को राज्य स्तरीय प्रथम पुरुस्कार रूपये 25000/- राशि का चैक एवं टेगौर इंटरनेशनल स्कूल, मानसरोवर की छात्रा कश्वी अग्रवाल राज्य स्तरीय दूसरा पुरुस्कार रूपये 10000/- राशि का चैक एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया । इसी प्रकार अंतराष्ट्रीय स्तर की यू.पी.यू. पत्र लेखन प्रतियोगिता 2023 में भारतीय विद्या भवन विद्याश्रम, प्रताप नगर जयपुर की छात्रा रिद्धिमा मीना को राज्य स्तरीय दूसरा पुरुस्कार रूपये 10000/- राशि का चैक एवं इसी स्कूल की छात्रा हर्षल गर्ग को राज्य स्तरीय तृतीय पुरुस्कार रूपये 5000/- राशि का चैक प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

जेएम पब्लिक स्कूल क्विज प्रतियोगिता में चांद बीबी टीम

संजीवनी टुडे

जयपुर। ईदगाह स्थित जेएम पब्लिक स्कूल में छठी से नवी क्लास तक के बच्चों के बीच एक क्विज कंपटीशन का आयोजन किया गया कंपटीशन में छ टीम बनाई गई ।रजिया सुल्तान,चांद बीबी, फातिमा शेख ,एपीजे अब्दुल कलाम, अल्लामा इकबाल और निखत जरीन ।इनमें चांद बीबी और एपीजे अब्दुल कलाम में टाइ ब्रेक हुआ।बाद में चांद बीबी टीम ने सही जवाब देकर अपनी टीम को जीत हासिल करवाई ।इस प्रोग्राम में हरदेव जोशी यूनिवर्सिटी की उपाध्यक्ष सारा इस्माइल ने यूसीसी और सीएए के बारे में बताया कि सरकार के द्वारा जो बिल लाए। गए हैं वह देश के कितने हक में है और लोगों को कितना फायदा पहुंचेगा इस बल के जरिए मुसलमान को अपनी मान्यता में कोई बदलाव नहीं करना होगा। उन्होंने कहा कि ये बिल उन लोगों के लिए है जो हिंदू ईसाई बौद्ध पारसी पाकिस्तान बांग्लादेश अफगानिस्तान से भारत में आकर रह रहे हैं उन्हें नागरिकता देने का प्रावधान है। एक पक्ष का मानना है कि इससे किसी को भी नुकसान नहीं है स्कूल के डायरेक्टर मोहम्मद हुसैन ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं से बच्चों को जनरल नॉलेज की बढ़ोतरी होती है और उनका देश के संविधान कानून और ताजा हालात की मालूमात भी होती है साथ ही सारा के द्वारा जो स्वतंत्रता सेनानियों और देश के इतिहास के बारे में शानदार अंदाज में जो मालूमात दी जाती है उसे बच्चों को आगे भविष्य में फायदेमंद साबित होगी ।प्रोग्राम के आखिर में विजय टीम और फर्स्ट रनर अप सेकंड रनर अप टीम को गिफ्ट और प्रशस्ति पत्र देकर नवाजा गया।

कांग्रेस सिर्फ गांधी परिवार के कल्याण को मानती है विकास : शेखावत

संजीवनी टुडे

रामदेवरा/जोधपुर। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री व भाजपा प्रत्याशी गजेन्द्र सिंह शेखावत ने रामदेवरा में कांग्रेस पर जमकर हमला किया। उन्होंने कहा, हम गरीब के घर में रोशनी को विकास मानते हैं, लेकिन कांग्रेस को गरीब के घर का विकास नहीं दिखाई देता है।कांग्रेस सिर्फ अपने नेताओं और गांधी परिवार के कल्याण को ही विकास मानती है। यह विकास को देखने का अपना-अपना नजरिया है। मीडिया से शेखावत ने कहा कि पिछले 10 साल के कालखंड में ईमानदारी से काम किया गया। इस बार जनता एक तरफ घोटालों की सरकार और दूसरी तरफ ईमानदारी की सरकार के बीच फर्क करके वोट करने वाली है, इसलिए इस बार 400 के पार का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि पहले भ्रष्टाचार की घटनाएं मीडिया की सुर्खियां बनी रहती थीं, लेकिन आज गरीब के उत्थान से जुड़ी खबरें मीडिया की सुर्खियां बनी रहती हैं। शेखावत ने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में जहां आतंकवादी घटनाओं की खबरें मीडिया की सुर्खियां बनी रहती थीं, वहीं आज धरती से लेकर चांद तक भारत की धमक वाली खबरें सुर्खियां

बनी रहती हैं, यह भारत का दुनिया में बढ़ता प्रभुत्व है। शेखावत ने कहा कि देश की जनता को विश्वास है कि भारत तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है और मोदी जी विकसित भारत के शिल्पकार हो सकते हैं, इस मंथन के बाद पार्टी ने इस बार 400 के पार का लक्ष्य रखा है, जिसमें भाजपा अकेले दम पर 370 से अधिक सीटें जीतेगी। उन्होंने कहा कि राजस्थान से भाजपा 2014 में सभी 25 सीटें जीती थी, 2019 में भी सभी 25 सीटें जीती और इस चुनाव में हम 25 की 25 सीटों पर कमल खिलाएंगे, लेकिन इस बार जीत का अंतर पिछले चुनावों से कहीं अधिक रहेगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में राष्ट्रोत्थान के लिए जिस संकल्प के साथ काम किया गया है, उस दृष्टिकोण से एनडीए इस बार 400 के पार के लक्ष्य को पूरा करेगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अगले पांच वर्षों के दौरान पानी की व्यवस्था को सुचारु किया जाएगा। कांग्रेस ने राजस्थान में पानी को लेकर केवल राजनीति की, जबकि देश में सबसे अधिक 27 हजार करोड़ की धनराशि राजस्थान को दी गई थी। उन्होंने कहा कि पानी राज्य का विषय है, इसलिए उस दिशा में जो काम राजस्थान की तत्कालीन कांग्रेस सरकार को करने चाहिए थे, वो काम नहीं किए गए, जिसकी वजह से राजस्थान पानी से संबंधित योजनाओं को धरातल पर उतारने में असफल रहा, लेकिन अब डबल इंजन की सरकार बन गई है, इसलिए इस दिशा में तेजी से काम शुरू कर दिया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मोदी जी के संकल्प के अनुसार अगले पांच वर्षों में हर क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा किए जाएंगे।

स्थानीय स्तर पर नई इंडस्ट्रीज को खड़ा किया जाएगा। शेखावत ने कहा, किसी भी देश में औधोगिक क्रांति के निवेश के लिए जिन मूलभूत जरूरतों की आवश्यकता होती है, उसमें जमीन पहली प्राथमिकता होती है, जो हमारे पास उपलब्ध है, दूसरी आवश्यकता बिजली होती है। अभी मुख्यमंत्री भजनलाल जी ने 2.5 गीगावाट का जो एमओयू साइन किया है, उसमें 2 लाख करोड़ का निवेश भी आएगा, उस लिहाज से हमारे पास बिजली सरप्लस में रहेगी और हमारे पास रिन्युअल एनर्जी का भी बहुत स्कोप है, इसीलिए बिजली और अधिक प्रचूरता के साथ उपलब्ध होगी। बाड़मेर और जैसलमेर में जमीन के नीचे बहुत सारा खारा पानी उपलब्ध है, जो 200 मिलियन क्यूबिक मीटर है, जिस खारे पानी को शुद्ध करने की प्रक्रिया पर भी तेजी से काम किया जा रहा है, जिस पानी को उद्योगों के लिए इस्तेमाल किया जाएगा, यहां रॉ-मैटेरियल और मेन पावर की भी कोई कमी नहीं है। शेखावत ने कहा कि ओरण और गौचर की भूमि हमारी सामूहिक धरोहर है, जिसका बचा रहना अत्यंत आवश्यक है, इसको लेकर किसी के मन में कोई शंका नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा, जिसे हम वर्षों से ओरण के रूप में जानते-पहचानते हैं, लेकिन राजस्व रिकॉर्ड में वह ओरण की भूमि के रूप में दर्ज नहीं होने की वजह से इस भूमि के आवंटन का संकट उत्पन्न हुआ है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है, उस संबंध में मैं टिप्पणी नहीं करूंगा, लेकिन जो ओरण है वह ओरण के रूप में दर्ज हो, भारतीय जनता पार्टी के सभी प्रतिनिधियों की यह अपेक्षा भी है और आकांक्षा भी है। अगर, ऐसा हो जाता है तो सुप्रीम कोर्ट के बहुत सारे ऑर्डर हैं, जिसके बाद एक इंच जमीन का भी आवंटन नहीं हो सकता है।

रैली निकाल दिया जल संरक्षण का संदेश

संजीवनी टुडे

सीएमएफ संस्था के सहयोग से ग्राम पंचायत खाम्बल में विश्व जल दिवस मनाया

पिण्डवाडा/सिरोही। खाम्बल ग्राम पंचायत में विश्व जल दिवस के मौके पर जन जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। जल है तो कल है...., हम सब ने यह ठाना है पानी को बचाना है.... जैसे जोशीले नारों के साथ छात्र-छात्राओं ने हर घर जल बचाने का संदेश पहुँचाया। मौका था विश्व जल दिवस - 22 मार्च, 2024 और इस महत्वपूर्ण दिन ग्राम खाम्बल के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के बच्चों ने यह जिम्मेदारी उठाई और जन जागरूकता रैली के माध्यम से जल संरक्षण को लेकर संदेश पहुँचाया । सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस संस्था के द्वारा टाटा ट्रट्स एवं वन ड्राप के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम के तहत सर्वप्रथम विद्यालय में सरपंच प्रतिनिधि शैतान सिंह के मार्गदर्शन में जल रैली का आयोजन किया गया। गांव के प्रमुख स्थानों से बच्चों की इस रैली को सभी ग्रामीणों ने सराहा। रैली के बाद विद्यालय में कक्षा 7 से 9 के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर व नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बच्चों ने जल से जुड़ें मुद्दों को बेहद कलात्मक तरीके से प्रस्तुत किया तथा कई रोचक नारे भी तैयार किए। इस अवसर पर सी.एम.एफ संस्था के सिरोही ब्लॉक प्रमुख संदीप सिंह ने जल संरक्षण के महत्व पर बच्चों को जानकारी दी। विद्यालय स्तर पर प्रधानाचार्य भूपेंद्र सोलंकी,महेंद्र सिंह,उत्तम सिंह राठौड,भारत भूषण ने सहयोग किया। संस्था से हड़मत सिंह, दीपिका, अनामिका, मोहन, धनराज उपस्थित थे।

मतदाता जागरूकता के अंतर्गत रक्तदान शिविर आयोजित

संजीवनी टुडे

बांदीकुई। निर्वाचन विभाग के निर्देशानुसार जिला निर्वाचन अधिकारी देवेंद्र कुमार के दिशा निर्देशन में गुरुवार को रामकरण जोशी राजकीय जिला चिकित्सालय दौसा में मतदाता जागरूकता के अंतर्गत रक्तदान शिविर आयोजित किया गया स्वीप के इस विशेष रक्तदान शिविर का स्विप नोडल अधिकारी एवं जिला परिषद के सीईओ धारा सिंह मीणा ने रक्तदान कर शुभारंभ किया तत्पश्चात युवा मतदाताओं ने भी रक्तदान किया। शिविर में विभिन्न विभागों के अधिकारी कर्मचारी एवम युवा कार्मिकों ने भी रक्तदान किया इसके साथ ही दौसा जिले कि विभिन्न सामाजिक सेवा संगठन जिनमें मां सरस्वती ब्लड डोनेशन टीम के संस्थापक रक्तदाता रामकेश मीना ने भी अपने जन्मदिवस पर जीवन का 19वीं बार रक्तदान किया। शहर में विभिन्न विभागों के अधिकारी कर्मचारी युवा कार्मिकों ने भी रक्तदान किया साथी दौसा जिले के विभिन्न सामाजिक सेवा संगठनो का भी इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा जिसमें मां सरस्वती ब्लड डोनेशन टीम दौसा, लायंस

क्लब, रोटरी क्लब ,आहान संस्थान, आदि के वालंटियर ने भी रक्तदान किया मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत दौसा जिले में स्वीप की नई पहल करते हुए रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया एवं मतदाताओं से मतदान की अपील की गई इस अवसर पर पीएमओ सुभाष बिलोनिया सूचना एवं जनसंपर्क संपर्क विभाग के उपनिदेशक रामजीलाल मीणा स्विप कार्यक्रम के जिला समन्वयक महेश आचार्य मां सरस्वती ब्लड डोनेशन टीम के संस्थापक रक्तदाता रामकेश मीना ,आहान संस्थान के अध्यक्ष मधुसूदन शर्मा, स्विप का जिला स्तरीय प्रकोष्ठ का स्टाफ मौजूद रहे शुभम जैमिनी गौरव शर्मा अविनाश नावरिया आदि ने भी रक्तदान किया।

छुट्टी कैंसिल रविवार को भी खुलेंगे देशभर के बैंक, आरबीआई ने दिया निर्देश

संजीवनी टुडे

दौसा । रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने रविवार, 31 मार्च 2024 को देशभर के बैंकों (उथद्वद्मप) को खोलने का निर्देश दिया है। आरबीआई ने बड़ा फैसला लेते हुए 31 मार्च, 2024 को रविवार होने के बावजूद देशभर के भी बैंकों को खोलने का फैसला किया है। आरबीआई ने सोशल मीडिया पर पोस्ट के जरिए इसकी जानकारी दी है. केंद्रीय बैंक के निर्देश के बाद देशभर के सभी बैंक 31 मार्च को खुले रहेंगे। आरबीआई ने 31 मार्च, रविवार को बैंकों को खोलने का निर्देश दिया है।. चालू वित्त वर्ष 2023-24 का आखिरी दिन होने के चलते रिजर्व बैंक ने यह फैसला लिया है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने कहा है कि 31 मार्च को एनुअल क्लोजिंग है। ऐसे में सभी बैंक खुलेंगे, ताकि वित्त वर्ष के अंत तक होने वाले ट्रांजैक्शन उसी साल में दर्ज हो सके। भारत सरकार ने सरकारी रिसेप्ट और भुगतान से संबंधित बैंकों की सभी शाखाओं को 31 मार्च को लेनदेन के लिए खुला रखने का अनुरोध किया है, ताकि सभी सरकारी लेनदेन का हिसाब रखा जा सके। आरबीआई ने कहा है कि 31 मार्च को वित्त वर्ष की एनुअल क्लोजिंग के दौरान देशभर के बैंकों को अपने तय समय पर खोलने का निर्देश दिया है। सभी बैंक 31 मार्च, रविवार को अपने नियमित समय से खुलेंगे और तय समय पर बंद होंगे। हालांकि ग्राहक एनईएफटी और आरटीजीएस ट्रांजेक्शन रात 12 बजे तक कर सकेंगे। सिर्फ बैंक ही नहीं इनकम टैक्स के सभी ऑफिस भी 31 मार्च, रविवार को खुल रहेंगे। सिर्फ रविवार नहीं बल्कि शुक्रवार, 29 मार्च को गुडफ्राइडे, शनिवार, 30 मार्च और रविवार, 31 मार्च को इनकम टैक्स के ऑफिस खुल रहेंगे. इनकम टैक्स विभाग ने देशभर के आयकर दफ्तरों को खुला रखने का निर्देश दिया है। वित्त वर्ष 2023-24 का अंतिम दिन होने के टलते इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने गुड फ्राइडे के चलते होने वाले लंबी छुट्टी को कैंसिल कर दिया है. आयकर विभाग ने कहा है कि देश भर के आईटी ऑफिस 29, 30 और 31 मार्च को खुले रहेंगे।

दिल्ली में ईडी की कार्रवाई, ओरण गोचर, विकसित भारत सहित कांग्रेस की नीतियों पर बोले: शेखावत

संजीवनी टुडे

जैसलमेर। जोधपुर संसदीय क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत विशेष विमान से गुरुवार रात्रि 8 बजे जैसलमेर एयरपोर्ट पहुंचे। एयरपोर्ट पर जैसलमेर विधायक छोटू सिंह भाटी, पोकरण विधायक महंत प्रताप पुरी महाराज, महंत बाल भारती महाराज, भाजपा जिला मंत्री कवराज सिंह चौहान, नखत सिंह भाटी, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष कुणाल सिंह अडबाला सहित भाजपा कार्यकर्ताओं ने मंत्री शेखावत का दुपट्टा व साफा पहनाकर स्वागत किया। जैसलमेर एयरपोर्ट से शेखावत मंदिर पैलेस में पूर्व महाराज हुकम सिंह की शोक सभा में सम्मिलित होने के लिए एयरपोर्ट से हुए रवाना हुए। इस दौरान बीच रास्ते में भारी संख्या में युवाओं द्वारा यूनियन सर्किल पर मंत्री का माला पहनाकर और बुके भेंट कर स्वागत किया गया। वहां से मंत्री मंदिर पैलेस के लिए रवाना हुए मंदिर पैलेस में पूर्व महाराज हुकम सिंह की शोक सभा में सम्मिलित होकर महाराज हुकम सिंह की प्रतिमा पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी और डॉक्टर जितेंद्र सिंह को ढाँढ़स बंधाया साथ ही डॉक्टर जितेंद्र सिंह के पुत्र शिवेंद्र सिंह को गले लगाकर दुख की घड़ी में संवेदनाएं व्यक्त की। उस समय राज परिवार सदस्य महाराज जितेंद्र सिंह, महाराज एकलव्य सिंह, महाराज विक्रम सिंह नाचना, राजकुमार शिवेंद्र सिंह मोजूद रहे। जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत जैसलमेर

से सड़क मार्ग से पोकरण के लिए रवाना हुए। मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने पोकरण पहुंच पोकरण में सैन धर्मशाला में पहुंच ल्लफागोत्सवङ्क में भी सम्मिलित होकर गुलाल उड़ाकर सभी को होली की शुभकामनाएं देकर फाग गायन कर फगोस्तव का आनद लिया।

वही मंत्री पोकरण से रामदेवरा के लिए रवाना हुए और धार्मिक नगरी रामदेवरा में मंत्री ने रात्रि विश्राम किया। वही मंत्री शेखावत ने सुबह विश्व विख्यात बाबा रामदेव के दर्शन कर अमन चैन खुशहाली की दुआ मांग पोकरण निकलें। शुक्रवार को पोकरण में कार्यकर्ताओं की बैठक ली। बैठक में पोकरण विधायक महंत प्रताप पुरी महाराज, पूर्व विधायक सांग सिंह, भाजपा जिला अध्यक्ष चंद्र प्रकाश शारदा, भाजपा नेता कवराज सिंह आईदान सिंह भाटी सहित भाजपा नेता कार्यकर्ता मौजूद रहे। लोकसभा चुनाव को लेकर यह बैठक अहम मानी जा रही है। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री व भाजपा प्रत्याशी गजेन्द्र सिंह शेखावत ने रामदेवरा में कांग्रेस पर जमकर हमला किया। उन्होंने कहा, हम गरीब के घर में रोशनी को विकास मानते हैं, लेकिन कांग्रेस को गरीब के घर का विकास नहीं दिखाई देता है।कांग्रेस सिर्फ अपने नेताओं और गांधी परिवार के कल्याण को ही विकास मानती है। यह विकास को देखने का अपना-अपना नजरिया है। मीडिया से रूबरू होते हुए शेखावत ने कहा कि पिछले 10 साल के कालखंड में ईमानदारी से काम किया गया। इस बार जनता एक तरफ घोटालों की सरकार और दूसरी तरफ ईमानदारी की सरकार के बीच फर्क करके वोट करने वाली है, इसलिए इस बार 400 के पार का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि पहले भ्रष्टाचार की घटनाएं मीडिया की सुर्खियां बनी रहती थीं, लेकिन आज गरीब के उत्थान से जुड़ी खबरें मीडिया की सुर्खियां बनी रहती हैं।

एमिटी यूनिवर्सिटी में साइंस कम्यूनिकेशन पर नेशनल वर्कशॉप

संजीवनी टुडे

जयपुर । भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के पर्स प्रोग्राम के तत्वावधान में एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी और एमिटी स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी राजस्थान के द्वारा दो दिवसीय ''साइंस कम्यूनिकेशन-ए प्रील्यूड'' विषय पर नेशनल वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप आयोजन का उद्देश्य सांइटिफिक न्यूज और इंफॉर्मेशन के प्रभावी प्रसार और साइंस को लोकप्रिय बनाने के लिए साइंस और नॉन सांइस कम्यूनिकेटर्स के बीच कैपिसिटी बिल्डिंग का निर्माण करना था। कार्यशाला के दौरान विभिन्न उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। दो दिवसीय कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन समारोह के साथ हुई, जिसमें गेस्ट ऑफ़ ऑनर सायंतनी जाफ़ा, महानिदेशक, आईसीईडी, जयपुर, प्रो. के.पी. मधु, साइंस कंसलटेंट, करंट साइंस, प्रभारी साइंस मीडिया सेंटर, आईआईएसईआर पुणे, डॉ. सुचिता चंपक संस्थापक और

निदेशक, साइरोई, दिल्ली ने सांइस कम्यूनिकेशन के नए टूल्स और प्लेटफार्मों के रेफरेंस में डिजिटल युग में साइंस कम्यूनिकेशन के विकसित परिदृश्य पर प्रकाश डाला। वर्कशॉप के दौरान एमिटी यूनिवर्सिटी राजस्थान जयपुर से वाइस चांसलर प्रोफ़ेसर (डॉ.) अमित जैन, प्रो वाइस चांसलर प्रोफ़ेसर (डॉ.) जी.के आसेरी, प्रोफ़ेसर (डॉ.) एसएल कोठारी, प्रोफ़ेसर (डॉ.) विनय शर्मा, और प्रोफ़ेसर (डॉ.) जयति शर्मा ने भी वर्कशॉप को संबोधित किया। एक्सपर्ट्स ने विशेष रूप से समाज के लिए बड़ा खतरा पैदा करने वाली दुष्प्रचार और गलत सूचनाओं के तेजी से प्रसार के बीच जन-जन तक सटीक वैज्ञानिक जानकारी प्रसारित करने की अत्यधिक आवश्यकता पर जोर देते हुए नवीनतम रुझानों, उपकरणों और तकनीकों से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. मनाली दत्ता और डॉ. तनुश्री मुखर्जी ने किया।

पिण्डवाडा पुलिस की लगातार चौथी को दिया अंजाम: अवैध अफीम का दूध परिवहन करते हुए दो अभियुक्त गिरफ्तार

संजीवनी टुडे

तस्करों के लिए पिण्डवाडा पुलिस बनी लक्ष्मण रेखा

पिण्डवाडा/सिरोही/विकास कुमार- जिला पुलिस अधीक्षक सिरोही अनिल कुमार के निर्देशन में आगामी लोकसभा चुनाव के मध्यनजर अवैध मादक पदार्थों की रोकथाम हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत प्रभुदयाल धानिया अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सिरोही व भंवरलाल चौधरी वृताधिकारी वृत पिण्डवाडा के निकटतम सुपरविजन में एवं हमीरसिंह भाटी नि.पु.थानाधिकारी पुलिस थाना पिण्डवाडा के नेतृत्व में पुलिस द्वारा कार्यवाही करते हुए एक कार से 02.340 किलोग्राम अवैध अफीम का दूध परिवहन करते हुए दो अभियुक्तो को गिरफ्तार किया गया है।

दिनांक 22.03.2024 को पन्नालाल उप निरक्षक. पुलिस थाना पिण्डवाडा व अमराराम उपनिरीक्षक. प्रभारी जिला पुलिस स्पेशल टीम द्वारा उदयपुर बायपास पुलिया हाईवे पर दौराने नाकाबन्दी वेगेनार कार नम्बर आरजे 12-सीए-0977 में तलाशी के दौरान

02.340 किलोग्राम अवैध अफीम का दूध बरामद कर दो आरोपियो को गिरफ्तार कियाम् उक्त आरोपियों के विरूद्ध जुर्म धारा 8/18 एन.डी.पी.एस. एक्ट में प्रकरण पंजिबद्ध किया गया। बरामद मादक पदार्थ की किमत करीबन 10 लाख रूपये है।

गोपीलाल पुत्र जीतमल जाति ब्राहमण (मेनारिया) उम्र 37 वर्ष निवासी गायरीयो 1.का मोहल्ला खेरोदा पुलिस थाना खेरोदा हाल आरके चौराया एसटी गेगोरिअर्स स्कुल रोड पन्ना विहार न्यु भुपालपुरा उदयपुर पुलिस थाना हाथीपोल जिला उदयपुर।,हीरालाल उर्फ धर्मेन्द्र डांगी पुत्र लोगरलाल जाति डांगी उम्र 35 वर्ष निवासी धर्मराज मंदिर के पास भुवाणा उदयपुर पुलिस थाना सुखेर जिला उदयपुर। पन्नालाल उप.निरक्षक.पुलिस थाना पिण्डवाडा। अमराराम उप निरक्षक. प्रभारी डी.एस.टी. मर जाब्ता। दिलीप कुमार हैड कानि. 643, पुलिस थाना पिण्डवाडा। दिलीप कुमार कानि. 67, पुलिस थाना पिण्डवाडा। भावेश कानि, 481, पुलिस थाना पिण्डवाडा। अरुणकुमार कानि. 75, पुलिस थाना पिण्डवाडा।

झाडोली व अजारी में रंगोली, प्रश्नोत्तरी, शपथ व प्रदर्शनी के माध्यम से अधिकाधिक मतदान करने की अपील

संजीवनी टुडे

पिण्डवाडा/सिरोही। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के केंद्रीय संचार ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, सिरोही व जिला निर्वाचन विभाग के सहयोग से सिरोही जिले में मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के लिए पिंण्डवाड़ा पंचायत समिति के अंतर्गत पिछले चुनावो में कम मतदान प्रतिशत वाले गांव झाडोली व अजारी में संगोष्ठी, प्रदर्शनी, शपथ, प्रश्नोत्तरी व रंगोली के माध्यम से मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर केंद्रीय संचार ब्यूरो, सिरोही के प्रभारी अधिकारी फूलचंद गहलोत ने कहा कि पिछले चुनावो में मतदान का प्रतिशत कम रहा है। अतःआप सभी प्रवासी मतदाताओं से संपर्क कर इस बार लोकसभा चुनाव में 26 अप्रैल को अधिक से अधिक मतदान करने हेतु प्रेरित कर लोकतंत्र का सम्मान करेंगे। इस मौके पर सहायक विकास अधिकारी पंचायत समिति पिंण्डवाड़ा भोमाराम ने मतदान का प्रतिशत बढ़ाने की अपील करते हुए वीएचए, ईसीआई सक्षम, सी विजिल, 1950 हेल्पलाइन के बारे में भी जानकारी प्रदान की।

सहायक विकास अधिकारी दिनेश कुमार प्रजापत ने ईवीएम से मतदान करने की प्रक्रिया एवं वीवी पेट के बारे में प्रदर्शनी के माध्यम से जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान रंगोली एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान बूथ लेवल अधिकारी सीताराम, दिनेश कुमार, त्रिलोकी नाथ शर्मा,भंवरलाल मेघवाल, मोहनलाल, तुकाराम वैष्णव उपस्थित थे।

सम्पादक की कलम से....

सम्पादकीय

देश में कैसे रोकेगें टीबी की बिमारी को !

24 मार्च को पूरे विश्व में टीबी दिवस मनाया जाता है। इस दिन टीबी यानि तपेदिक रोग के बारे में लोगों को जागरूक किया जाता है। यह एक संक्रामक बीमारी है। इस बीमारी का इलाज तो है बशर्ते लोग नियमित रूप से दवा लें। भारत की नई स्वास्थ्य नीति में 2025 तक टीबी उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है। तपेदिक यानि टीबी एक संक्रामक रोग है, जो संक्रमित लोगों के खांसने, छींकने या थूकने से फैलता है। आमतौर पर यह फ़ेफड़ों को प्रभावित करता है लेकिन यह शरीर के किसी भी हिस्से में फैल सकता है।

टी.बी माइक्रोबैक्टीरियम नामक बैक्टीरिया की वजह से होता है। यह बैक्टीरिया फ़ेफड़ों में उत्पन्न होकर उसमें घाव कर देते हैं। यह कीटाणु फ़ेफड़ों, त्वचा, जोड़ों, मेरूदण्ड, कण्ठ, हड्डियों, अंतडियों आदि पर हमला कर सकते हैं। ट्यूबरक्लोसिस जिसे टीबी या क्षय रोग के नाम से जानते हैं, एक खतरनाक बीमारी है। ये एक ऐसी बीमारी है जिसकी पहचान आसानी से नहीं हो पाती इसलिए इसके लक्षणों पर ध्यान देना बेहद जरूरी है। दुनिया में छह-सात करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रस्त हैं और प्रत्येक वर्ष 25 से 30 लाख लोगों की इससे मौत हो जाती है।

वित्त मंत्री अरुण जेटली ने संसद में 2018-19 का बजट पेश करते हुए कहा था कि टीबी रोगियों के पोषण के लिए सरकार ने सहायता स्वरूप 600 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की है। उन्होंने कहा कि देश में जिन टीबी रोगियों का इलाज चल रहा है उन्हें 500 रुपए प्रतिमाह सहायता के रूप में दिए जाएंगे। सरकार ने इस भयंकर बीमारी को 2025 तक जड़ से खत्म करने की घोषणा की है। सरकार द्वारा टीबी के मरीजों को सहायता मुहैया कराने की पहल राष्ट्रीय रणनीतिक योजना का हिस्सा है। जिसके माध्यम से स्वास्थ्य मंत्रालय ने साल 2025 तक तपेदिक के उन्मूलन का लक्ष्य रखा है।

दुनियाभर में बीमरियों से मौत के 10 शीर्ष कारणों में तपेदिक को प्रमुख बताया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट 2016 के मुताबिक भारत में टीबी से हर साल पांच लाख भारतीयों की मौत हो जाती है। यानी देश में हर तीन मिनट में दो भारतीयों की मौत हो जाती है। 2016 में जारी वैश्विक तपेदिक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हर साल 28 लाख टीबी के नये मरीज पंजीकृत होते हैं। टीबी भारत की सबसे बड़ी और गंभीर स्वास्थ समस्या है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने टीबी उन्मूलन अभियान को राष्ट्रीय प्राथमिकता के तौर पर लिया है। विश्व में भारत पर टीबी का बोझ सबसे अधिक है। देश ने टीबी उन्मूलन को प्राथमिकता के तौर पर लिया गया है। इसका उद्देश्य टीबी के नए मामलों में 95 प्रतिशत की कमी करना और टीबी से मृत्यु में 95 प्रतिशत की कमी लाना है। अनुमान है कि भारत में रोजाना करीब आठ सौ लोगों की मौत टीबी की वजह से हो जाती है। भारत में टीबी के करीब 10 प्रतिशत मामले बच्चों में हैं लेकिन इसमें से केवल छह प्रतिशत मामले ही सामने आते हैं। 2016 में 4,23,000 लोग टीबी के कारण अपनी जान गंवा बैठे थे। 2017 में विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से जारी की गई रिपोर्ट के मुताबिक भारत उन 7 देशों में शामिल था जहां टीबी के सबसे ज्यादा मरीज है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया की 27 फीसदी टीबी के मामले भारत में हैं। देश में यह सबसे घातक संक्रामक रोग है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया में सबसे ज्यादा टीबी के मामले भारत में पाए जाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की वैश्विक टीबी रिपोर्ट 2017 के अनुसार भारत, इंडोनेशिया, चीन, फिलीपींस, पाकिस्तान , नाजीरिया और दक्षिण अफ्रीका इससे गंभीर रूप से प्रभावित है। दुनिया में टीबी के मरीजों की संख्या का 64 प्रतिशत सिर्फ इन्हीं सात देशों में है, जिनमें भारत का स्थान सबसे ऊपर है। भारत के अलावा चीन और रूस में 2016 में दर्ज किए मामलों में करीब आधे 4,90,000 मामलें मल्टीड्रग-रेसिस्टैंट टीबी के है। भारत में टीबी की दवा के खिलाफ प्रतिरोधी क्षमता रखनेवाले मरीजों की संख्या 2015 में 79,000 थी, जो 2014 में 71000 थी। नए टीबी के मामलों में करीब 2.5 फीसदी मामले ऐसे आ रहे हैं, जिन्होंने टीबी की दवा के खिलाफ प्रतिरोधी क्षमता विकसित कर ली है और उन पर दवाइयों का कोई असर नहीं हो रहा। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में कहा गया है, भारत में टीबी अनुमान की तुलना में कही अधिक बड़ी महामारी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि भारत टीबी से निपटने को लेकर गंभीर नहीं है। अपनी ग्लोबल टीबी रिपोर्ट 2016 में उसने हमारे आंकड़ों पर भी सवाल उठाया है।

आज का राशिफल

यह राशिफल जन्म राशि पर आधारित है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर थे, वही उसकी जन्म राशि होती है। यदि राशि की जानकारी आपको नहीं है तो अपने नामाक्षर से राशिफल देखें।

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ) : आज भाग्य से कोई नया प्रस्ताव मिल सकता है। सरकारी काम आसानी से बन जाएंगे। अधिकारी सहयोग करेंगे। किसी चैरिटी आदि में धन खर्च करेंगे। मित्रों के साथ पार्टी में जा सकते हैं।

वृषभ (ई,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो) : सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। व्यक्तिगत मामलों में गलतफहमी को जन्म देने वाली कोई बात हो सकती है। परिवार के साथ पार्टी में जा सकते हैं। कोई नया प्रस्ताव यदि आज मिलता है।

मिथुन (क,की,कू,घ,ङ, छ, के,को, ह) : कार्यों को मन लगाकर पूरा करेंगे। आपकी बढ़ते प्रभाव से कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। आज की गई मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत मामलों को सावधानी से हल करें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो) : किसी योजना का क्रियान्वयन हो जाएगा। अधूरे काम भी किसी न किसी सहयोग से आज पूरे हो जाएंगे। धैर्यपूर्वक निर्णय लेने पड़ेंगे। भाग-दौड़ बनी रहेगी, परंतु यात्रा करना आज ठीक नहीं रहेगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे) : परिवार के बड़े सदस्यों की आज्ञा मान कर चलेंगे तो फायदे में रहेंगे। लाभ के एक से अधिक अवसर सामने होंगे। चाहा गया सहयोग नहीं मिलने से काम खुद ही पूरे करने पड़ेंगे। बड़े भाई से लाभ होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो) : आज घर और बाहर दोनों जगह आपके काम की सराहना होगी। काम के घंटे बढ़ जाएंगे अतः पिछले छूटे कामों को पहले पूरा कर लें। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग लाभ में रहेगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते) : आज काम बनने में थोड़ी असुविधा हो सकती है। विरोधियों से सावधान रहना होगा। प्रोपर्टी के खरीदने या बेचने से संबंधी बात हो सकती है। पुराने मित्रों से मुलाकात होने की संभावना है।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) : व्यावसायिक कार्यों का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ेगा। सहयोग मिल जाने से थोड़ी आसानी हो जाएगी। व्यक्तिगत संबंधों में सौहार्द्र की भावना बढ़ने से मन प्रसन्न होगा।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे) : आज का दिन महत्वपूर्ण काम करने के लिए नहीं है। निजी समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। परिवार के साथ समय बिताना आवश्यक है, चाहें तो कहीं आउटिंग के लिए जा सकते हैं।

मकर (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी) : आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परंतु काम फिर भी आसानी से बन जाएंगे। लाभ की कोई नई योजना बनाकर उस पर अमल करेंगे। मित्र विशेष सहयोगी बनकर सामने आएंगे।

कुंभ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा) : आज घर की बुजुर्ग स्त्री की सलाह काम आएगी, महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय उसको नजरअंदाज ना करें। यात्रा करना हित में नहीं रहेगा, बहुत जरूरी हो तो पहले मंदिर जाएं फिर यात्रा करें।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची) : आज योग्यता दिखाने का उचित अवसर मिलेगा। लाभ देने वाली छोटी यात्रा की संभावना है। बडी प्रतिस्पर्धा में भी विजयी होंगे। वाहन धीमी गति में चलाएं, अन्य कामों में भी जल्दबाजी ना करें।

राजमार्गों और राजस्व के लिए सेहतमंद पहल

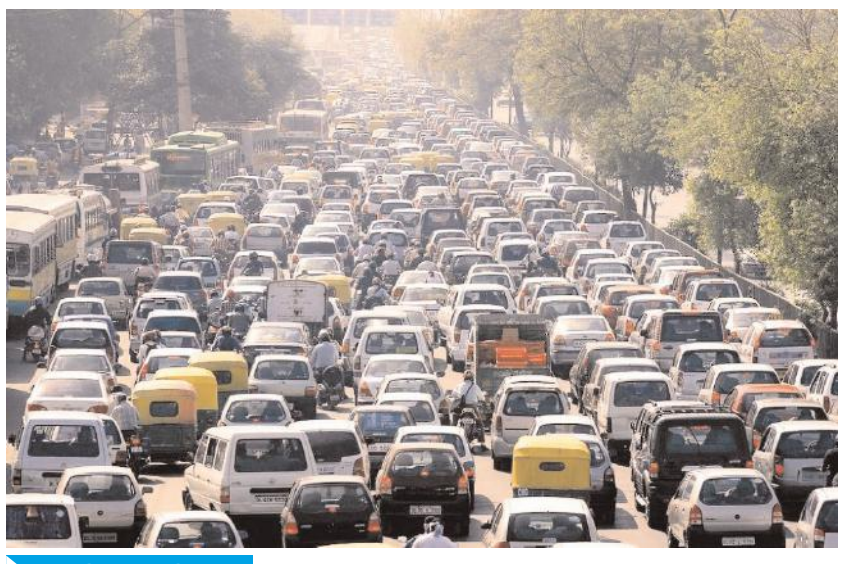

देश में वाहनों की खुले आवागमन की दिशा में केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी की ताजा घोषणा महत्वपूर्ण है। जिसके अनुसार एक साल के भीतर देश भर में टोल नाके खत्म कर दिये जायेंगे। टैक्स कलेक्शन के लिए ग्लोबल पॉजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) लागू किया जाएगा। जगह जगह पर कैमरे की जद में आने से अपने आप पैसा खाते से निकल जाएगा। अब गाड़ियों को कहीं भी रोकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यानी मुफ्तखोर और अराजक तत्व भी टैक्स देंगे, वह भी बड़े प्रेम से। ये बात किसी से छिपी नहीं है कि हमारे देश में टोल नाके भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी के जीते-जागते अड्डे हैं।

टोल प्लाजा पर टोल टैक्स न देने को लेकर आए दिन झड़प होती रहती है। रसूखदार लोग अपनी रसूख का इस्तेमाल कर बिना टोल टैक्स भरे निकलने की कोशिश करते हैं। वो अलग बात है कि टोल टैक्स किन-किन लोगों के लिए मुफ्त होगा इसकी पूरी सूची टोल नाके पर लगी होती है। व्यवसायिक वाहनों के लिए तो ये किसी मुसीबत से कम नहीं हैं। इनके ठेके अधिकतर नेताओं और नौकरशाहों के नजदीकी लोगों के पास होने से इनकी ज्यादतियों को सरकारी संरक्षण भी मिलता है। इसके अलावा उन पर समय भी बहुत नष्ट होता था। इसको हल करने के लिए शुरू की गई फास्ट टैग प्रणाली के कारण टोल नाकों पर होने वाली दादागिरी और समय की बर्बादी तो रुकी ही सरकार को मिलने वाले राजस्व में भी अच्छी-खासी वृद्धि हुई। राजमार्गों पर बने टोल प्लाजा सरकार के लिये राजस्व का बड़ा केंद्र हैं। असल में जब हाईवे बनकर तैयार हो जाता है तो उसकी मरम्मत में आने वाला खर्च और उसकी लागत निकालने के लिए टोल टैक्स वसूल किया जाता है। प्रत्येक सड़क पर टोल टैक्स नहीं वसूला जाता है। टोल टैक्स वसूल किए जाने के कुछ नियम भी है। आमतौर पर उन सड़कों पर टोल टैक्स वसूल किया जाता है, जिन सड़कों को चैड़ा करके बनाया जाता है। टोल टैक्स हर जगह के हिसाब से अलग-अलग हो सकता है। अमूमन टोल टैक्स सड़क की लंबाई-चैड़ाई और वाहन के आकार पर भी निर्भर करता है। सड़क की लंबाई और चैड़ाई जितनी ज्यादा होगी, उतना ज्यादा ही टोल टैक्स वसूल किया जाएगा। इसके अलावा वाहन जितना बड़ा या भारी होगा, टोल टैक्स ज्यादा होगा. ज्यादातर जगहों पर फोर व्हीलर पर टोल टैक्स लगाया जाता है।

वर्ष 2014 में, अहमदाबाद और मुंबई के बीच स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के तहत फास्ट टैग योजना की शुरूआत की गयी थी। अगले दो वर्षों में राष्ट्रीय राजमार्गों पर स्थापित 347 टोल प्लाजा ने फैस्टैग से भुगतान लेना शुरू कर दिया था। 2017 में एनएचएआई ने अपनी परिधि के तहत सभी 370 टोल प्लाजाओं में फास्ट टैग प्रणाली के तहत टैक्स वसूली शुरू की। दिसंबर 2017 के बाद भारत में बेचे जाने वाले सभी नए वाहनों फास्ट टैग अनिवार्य किया गया। 19 अक्टूबर, 2019 को फास्ट टैग देश के सभी राष्ट्रीय राजमार्गों पर अनिवार्य कर दिया। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) के मुताबिक मार्च 2020 तक देश में 566 टोल प्लाजा मौजूद हैं। अप्रैल 2019 से मार्च 2020 तक हाईवे पर मौजूद टोल प्लाजा से एनएचएआई करीब 26851 करोड़ रुपये टोल टैक्स के रूप में वसूल चुकी है। ऐसे में हर महीने टोल टैक्स के रूप में 2237 करोड़ रुपये की एनएचएआई को कमाई हुई। इस रकम का इस्तेमाल हाईवे की मरम्मत और उसके रख-रखाव के लिए किया जाता है। वहीं केंद्रीय सड़क परिवहन नितिन गडकरी ने संसद में बताया था कि 2019-20 में 29 फरवरी तक केंद्र सरकार को 7321 करोड़ रुपये की टोल टैक्स से कमाई हुई थी।

फास्टैग की अनिवार्यता के बाद ईधन की खपत में आई है और इसके अलावा प्रदूषण पर भी लगाम लगी है। फास्ट टैग का उपयोग पिछले कुछ महीनों के दौरान काफी तेजी के साथ बढ़ा है। बीते साल नवंबर में जारी किए गए एनएचएआई के एक बयान के अनुसार, फैस्टैग अब तक के कुल टोल कलेक्शन में लगभग तीन-चैथाई का योगदान देता है। वहीं, एक साल पहले 70 करोड़ रुपये की तुलना में 92 करोड़ रुपये पर था। एनएचएआई को उम्मीद है कि फास्ट टैग प्रणाली से आगामी पांच सालों में टोल आय 1,34,000 करोड़ रुपए होगी। फास्ट टैग एक पूर्व भुगतान प्रणाली है जिसमें टोल टैक्स का अग्रिम भुगतान सरकार के खजाने में आ जाता है। मात्र एक महीने के भीतर ये साबित हो गया कि यह बहुत ही प्रगतिशील और पारदर्शी व्यवस्था है। लेकिन इसके कारण उन लोगों को परेशानी होने लगी जिनका निवास राजमार्ग के करीब है। ऐसे लोगों को रोजमर्रे के काम से अपने आसपास के क्षेत्र तक आने-जाने के लिए भी लम्बी दूरी के लिए निर्धारित टोल टैक्स चुकाना पड़ रहा है जिसकी वजह से जन असंतोष बढ़ा है। इस समस्या का हल टोल टैक्स की वसूली जीपीएस प्रणाली से किये जाने से हो जायेगी क्योंकि तब वाहन चालक को उतनी ही दूरी का टैक्स देना पडेगा जितनी की उसने यात्रा की। स्मरणीय है कि देश के ट्रक चालकों के संगठन लम्बे अरसे से मांग करते आ रहे थे कि टोल नाके खत्म कर दिए जाएं तो वे टोल टैक्स से होने वाली आय के बराबर राशि सरकार को एकमुश्त देने को राजी हैं। नाकों पर होने वाली जबरिया वसूली और समय की बर्बादी को देखते हुए उनकी वह मांग सरकार को जमी किन्तु अब जाकर उसे अमल में लाये जाने की शुरुआत हुई है। इसमें दो राय नहीं है कि राजमार्गों के उन्नयन और विकास ने भारत में परिवहन क्रांति का सूत्रपात किया।

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटलबिहारी वाजपेयी की दूरदर्शिता और गडकरी जी की अद्भुत कार्यशैली ने जो चमत्कार किया उसकी वजह से देश में सडक परिवहन में तेजी से वृद्धि हुई है। कोरोना काल में लगे लॉकडाउन के दौरान लाखों लोग निजी वाहनों से अपने गंतव्य तक पहुंच सके। विश्वस्तरीय राजमार्ग पर चलते हुए टोल टैक्स देना वाहन स्वामी को अखरता नहीं है क्योंकि समय बचने के साथ ही वाहन के रखरखाव पर होने वाला खर्च भी बचता है। अमेरिका में ये उक्ति बड़ी प्रचलित है कि आर्थिक विकास राजमार्गों से होकर ही आता है। स्वतंत्र भारत में इसे समझने में आधी सदी खर्च कर दी गई। पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी ने जब स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना प्रारम्भ की तब मुलायम सिंह यादव ने तंज कसा था कि राजमार्गों का विकास भारत में विदेशी कार निर्माताओं के पैर जमाने के लिए किया जा रहा है। टोल नाकों को खत्म किये जाने से भी राजनेताओं और उनके चहेते नौकरशाहों को भारी तकलीफ होगी। लेकिन देश को आगे बढ़ाना है तो क्षणिक राजनीतिक लाभ से ऊपर उठकर सोचने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। इसमें कोई दो राय नहीं है कि टोल नाकों पर पहले फास्ट टैग और एक साल के भीतर उनको पूरी तरह खत्म करते हुए जीपीएस प्रणाली से टोल टैक्स की वसूली एक बड़ा सुधार होगा जिससे देश में सड़क परिवहन और सुविधाजनक बनेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी घरेलू पर्यटन को विकसित करने पर लगातार जोर देते हैं। राजमार्गों पर यात्रा जितनी आसान होती जायेगी, घरेलू पर्यटन का विकास उतनी ही तेजी से होगा क्योंकि भारत का विशाल मध्यम वर्ग भी अब चैपहिया वाहन पर चलने को लेकर बहुत ही उत्साहित है। केंद्र की इस पहल से राजस्व और राजमार्गों की सेहत सुधरेगी और देशवासी बेहतर सड़क परिवहन का मजा ले पाएंगे।

विचार बिन्दु

आशीष वशिष्ठ

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटलबिहारी वाजपेयी की दूरदर्शिता और गडकरी जी की अद्भुत कार्यशैली ने जो चमत्कार किया उसकी वजह से देश में सडक परिवहन में तेजी से वृद्धि हुई है। कोरोना काल में लगे लॉकडाउन के दौरान लाखों लोग निजी वाहनों से अपने गंतव्य तक पहुंच सके। विश्वस्तरीय राजमार्ग पर चलते हुए टोल टैक्स देना वाहन स्वामी को अखरता नहीं है क्योंकि समय बचने के साथ ही वाहन के रखरखाव पर होने वाला खर्च भी बचता है। अमेरिका में ये उक्ति बड़ी प्रचलित है कि आर्थिक विकास राजमार्गों से होकर ही आता है।

रायपुर के पास है कबीर पंथियों की तीर्थ स्थल दामाखेड़ा

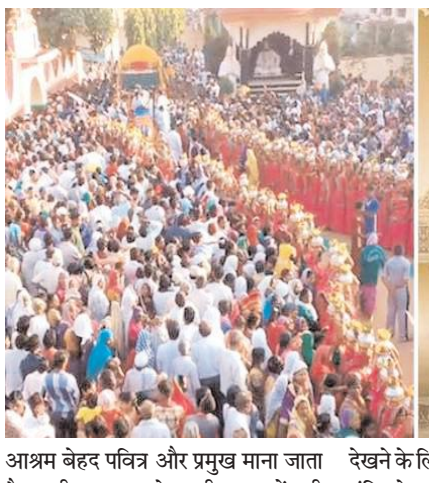

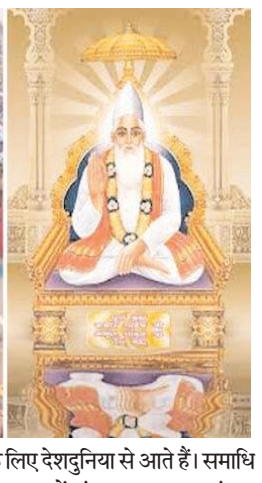

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के समीप कबीर पंथियों की तीर्थ स्थल है। यहां देश-दुनिया से श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। रायपुर-बिलासपुर सड़क मार्ग पर सिगमा से 10 किमी की दूरी पर एक छोटा सा ग्राम है। यह कबीरपंथियों के आस्था का सबसे बड़ा केंद्र माना जाता है। कबीर साहब के सत्य, ज्ञान, तथा मानवतावादी सिंद्धांतों पर आधारित दामाखेड़ा में कबीर मठ की स्थापना 1903 में कबीरपंथ के 12वें गुरु अग्रनाम साहब ने दशहरा के शुभ अवसर पर की थी। तब से दामाखेड़ा कबीर पंथियों के तीर्थ स्थालों के रूप में प्रसिद्ध है।

मध्य प्रदेश के जिला उमरिया के अंतर्गत बांधवगढ़ निवासी संत धर्मदास, कबीर साहब के प्रमुख शिष्य थे। जिन्हें कबीर साहब ने अपना संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान दिया और द्वितीय पुत्र मुक्तामणि नाम साहब को 42 पीढ़ी तक कबीर पंथ का प्रचार-प्रसार करने का आशीर्वाद प्रदान किया। इस तरह मुक्तामणि नाम साहब कबीरपंथ के प्रथम वंशगुरु कहलाए, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के ग्राम कुटुमाल, जिला कोरबा को कबीर पंथ के प्रचार प्रसार के लिए कार्यक्षेत्र बनाया।

छत्तीसगढ़ में कई स्थानों पर कबीर आश्रम हैं। लेकिन दामाखेड़ा का कबीर आश्रम बेहद पवित्र और प्रमुख माना जाता है। इसी आश्रम से सभी आश्रमों की गतिविधियां संचालित होती हैं। कबीर पंथ में चौका, आरती का बहुत महत्व है। यह गुरु पूजा विधान है।

चौका-आरती भारत की प्राचीन परंपरा है। इसकी सभी गतिविधियां आश्रम से संचालित होती हैं। वहीं समाधि मंदिर में कबीर साहब की जीवनी को बड़े ही मनमोहक एवं कलात्मक ढंग से दीवारों में नक्काशी कर उकेरा गया है। कबीर साहब के प्रगट स्थल की जीवंत झांकी यहां पर श्रद्धालु देखने के लिए देशदुनिया से आते हैं। समाधि मंदिर के मध्य में वंशगुरु उग्रनाम एवं गुरु माताओं की समाधियां स्थित हैं साथ ही यहां पर कबीर पंथ के प्रथम वंश गुरु मुक्तामणि नाम साहब का मंदिर बना हुआ है। जिसके ठीक सामने कबीर पंथ का प्रतीक सफ़ेद ध्वज संगमरमर के चबूतरे पर लहरा रहा है। श्रद्धालु यहां माथा टेकते हैं। पंथ और अनुयायियों की यह तीर्थ स्थली विश्व प्रसिद्ध है। यहां से सिगमा 10 किमी और रायपुर शहर 57 किमी है। यहां उच्च स्तरीय होटल ठहरने के लिए उपलब्ध हैं।

23 मार्च की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

1995 रैनटो रूगीएरो विश्व व्यापार संगठन के पहले महानिदेशक नियुक्त, भारत के विश्वनाथन आनंद ने प्रोफ़ेशनल चेस एसोसियेशन कैंडीडेट्स के फ़ाइनल शृंखला को जीता।

1996 ताइवान में पहली बार राष्ट्रपति के लिए सीधे चुनाव सम्पन्न।

1999 पराग्वे के उपराष्ट्रपति पुई मारिया अरगाना की हत्या।

2001 रूसी अंतरिक्ष स्टेशन 'मीर' की जल समाधि।

2003 दक्षिण अफ़्रीका में वाडरर्स में विश्व कप क्रिकेट के फ़ाइनल में आस्ट्रेलिया ने भारत को 125 रनों से हराकर विश्व कप पर कब्ज़ा बरकरार रखा।

2006 आस्ट्रेलिया ने तस्करी के आरोप में उत्तरी कोरिया के जहाज़ पोंस गू को डुबोया।

2007 भारत विश्वकप क्रिकेट में श्रीलंका से हारा।

2008 भारत ने ज़मीन से ज़मीन पर मार करने वाली मिसाइल 'अग्नि-1' का सफल परीक्षण किया।
अमेरिकी अंतरिक्ष यात्रियों राबर्ट वेनकेन और साइक फ़ोरमैन ने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की मरम्मत के लिए अंतिम स्पेसवॉक किया। नासा ने पृथ्वी से 7.5 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर हुए एक अंतरिक्ष विस्फोट को देखा।

जन्मे व्यक्ति

1614 जहाँआरा, मुग़ल बादशाह शाहजहाँ और 'मुमताज़ महल' की सबसे बड़ी पुत्री थी।

1880 बसंती देवी - भारत की स्वतंत्रता सेनानी।

तेज करना होगा टीबी उन्मूलन अभियान

विचार बिन्दु

रमेश सर्राफ धमोरा

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि भारत टीबी से निपटने को लेकर गंभीर नहीं है। अपनी ग्लोबल टीबी रिपोर्ट में उसने हमारे आंकड़ों पर भी सवाल उठाया है।

24 मार्च को पूरे विश्व में टीबी दिवस मनाया जाता है। इस दिन टीबी यानि तपेदिक रोग के बारे में लोगों को जागरूक किया जाता है। टीबी एक संक्रामक बीमारी है। जो संक्रमित लोगों के खांसने, छींकने या थूकने से फैलती है। आमतौर पर यह फ़ेफड़ों को प्रभावित करती है। लेकिन यह शरीर के किसी भी हिस्से में फैल सकती है। इस बीमारी का इलाज तो है बशर्ते लोग नियमित रूप से दवा लें। भारत की नई स्वास्थ्य नीति में 2025 तक टीबी उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है। टी.बी माइक्रोबैक्टीरियम नामक बैक्टीरिया की वजह से होता है। यह बैक्टीरिया फ़ेफड़ों में उत्पन्न होकर उसमें घाव कर देते हैं। यह कीटाणु फ़ेफड़ों, त्वचा, जोड़ों, मेरूदण्ड, कण्ठ, हड्डियों, अंतडियों आदि पर हमला कर सकते हैं। ट्यूबरक्लोसिस जिसे टीबी या क्षय रोग के नाम से जानते हैं। यह एक ऐसी बीमारी है जिसकी पहचान आसानी से नहीं हो पाती है। इसलिए इसके लक्षणों पर ध्यान देना बेहद जरूरी है। दुनिया में छह-सात करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रस्त हैं और हर वर्ष 25 से 30 लाख लोगों की इससे मौत हो जाती है। दुनिया में बीमरियों से मौत के 10 शीर्ष कारणों में टीबी को प्रमुख बताया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 2018 में टीबी मरीजों की संख्या में पिछले साल की तुलना में करीब 50,000 की कमी आई। साल 2017 में भारत में टीबी के 27.4 लाख मरीज थे जो साल 2018 में घटकर 26.9 लाख रह गए। भारत में 2018 में टीबी के करीब 26.9 लाख लाख मामले सामने आए। भारत में टीबी के इलाज की कारगर दवा रिफामसिन के हताश करने वाले आंकड़े सामने आए हैं। इस दवा के निष्प्रभावी मामलों की संख्या 2017 में 32 फीसदी थी। यह संख्या 2018 में बढकर 46 फीसदी हो गयी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कहना है कि 2025 तक भारत को टीवी मुक्त बनाया जायेगा। मोदी सरकार निरोगा भारत बनाने का प्रयास कर रही है। साल 2025 तक देश को टीवी मुक्त करने का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि देश में जिन टीबी रोगियों का इलाज चल रहा है उन्हें 500 रुपए प्रतिमाह सहायता के रूप में दिए जा रहें हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में स्वास्थ्य सेवा का बड़ा ढांचा कमजोर है और स्वास्थ्य कर्मचारियों की भारी कमी है। इसके अलावा बीमारी का शुरुआती दौर में पता लगने में दिक्कत और सही इलाज का मिलना चुनौती बनी हुई है। विश्व में भारत पर टीबी का बोझ सबसे अधिक है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में टीबी उन्मूलन को प्राथमिकता के तौर पर लिया गया है। इसका उद्देश्य टीबी के नए मामलों में 95 प्रतिशत की कमी करना और टीबी से मृत्यु में 95 प्रतिशत की कमी लाना है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में रोजाना करीब आठ सौ लोगों की मौत टीबी की वजह से हो जाती है। भारत में टीबी के करीब 10 प्रतिशत मामले बच्चों में हैं। लेकिन इसमें से केवल छह प्रतिशत मामले ही सामने आते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की वैश्विक टीबी रिपोर्ट के अनुसार भारत, इंडोनेशिया, चीन, फिलीपींस, पाकिस्तान , नाजीरिया और दक्षिण अफ्रीका इससे गंभीर रूप से प्रभावित है। दुनिया में टीबी के मरीजों की संख्या का 64 प्रतिशत सिर्फ इन्हीं सात देशों में है, जिनमें भारत का स्थान सबसे ऊपर है। विश्वभर के टीवी मरीजों में से 27 प्रतिशत यानि सबसे अधिक मरीज भारत में है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि भारत में टीबी के केवल 58 प्रतिशत मामले ही दर्ज होते हैं। एक तिहाई से ज्यादा मामले या तो दर्ज ही नहीं होते हैं या उनका इलाज नहीं हो पाता है। इसका बड़ा कारण यह है कि गैर सरकारी सेक्टर के अस्पतालों में टीबी को दर्ज किए जाने का अब तक कोई सिस्टम नहीं बना पाना है। संगठन का ऐसा अनुमान है कि ऐसे तकरीबन दस लाख और टीबी मरीज देश में है जिन्हें पहचाना ही नहीं जा सका है। इसलिए माना यह जाना चाहिए कि हम 2025 तक टीबी को जड़ से मिटा देने की बात कर रहे हैं मगर वह इतना आसान नही है।

देश में बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे जी रही है। जब तक गरीबी दूर नहीं होगी तब तक टीबी पर पूर्णतया रोक नहीं लग पायेगी। टीबी का संबंध पोषण से जुड़ा रहता है। भूखे पेट रोगों से लडने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए टीबी की बीमारी के शिकार गरीब तबके के लोग ज्यादा होते हैं। पोषण से मतलब संतुलित भोजन से माना जाना चाहिए। इसलिए यहां पर केवल टीबी का इलाज मुहैया करा भर देने से टीबी का खात्मा संभव नहीं है। यह तब मुमकिन होगा जबकि देश में लोगों को रोग प्रतिरोधक ताकत बनाए रखने के लिए संतुलित आहार भी मिले।

किडनी और लिवर के लिए घातक है हीट स्ट्रोक

गर्मियों में काफी लोग हीट स्ट्रोक के शिकार हो जाते हैं। हीट स्ट्रोक एक गंभीर मामला है। इस स्थिति से पूरी तरह बचना संभव है, लेकिन हीट स्ट्रोक में जरा-सी लापरवाही मौत को न्योता दे सकती है। सबसे पहले समझते हैं कि हीट स्ट्रोक है क्या। कैसे ये शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को प्रभावित करता है और किन तरीकों से इससे बचा जा सकता है।

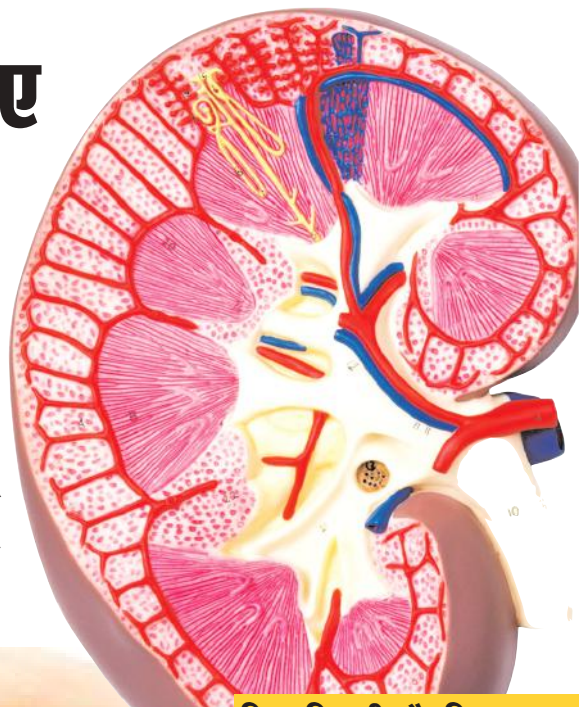

दिल, किडनी और लिवर ख़तरे में

तेज गर्मी से शरीर की मेटाबॉलिक एक्टिविटी यानी पेट से जुड़े अंगों के काम करने की क्षमता एकदम से बढ़ जाती है। इससे आमतौर पर ब्लड प्रेशर कम हो जाता है और तुरंत ही दिल पर इसका असर पड़ने लगता है, क्योंकि ऑक्सीजन का लेवल तेजी से कम होने लगता है। मेटाबॉलिज़्म बिगड़ने से शरीर में बेकार की चीजें को निकलने का मौका नहीं मिलता, जिससे किडनी और लिवर डैमेज होने लगते हैं। ऐसी स्थिति में पेशेंट को आईसीयू में इलाज की जरूरत पड़ जाती है। यूरिन रुक जाने की हालात में किडनी तक फेल होने की संभावना बनी रहती है।

जल्दी लक्षण समझें

शरीर का तापमान तेजी से बढ़ना, बहुत ज्यादा गर्मी लगना, सिरदर्द, थकान, पसीना न निकलना, चिड़चिड़ापन, चक्कर आना, जी मिचलाना, सांसों का तेजी से बढ़ना और घटना आदि हीट स्ट्रोक के शुरुआती लक्षण होते हैं।

कई बार एकाएक बेहोशी या दौरे जैसे हालात भी बन जाते हैं। हीट स्ट्रोक में पहला घंटा सबसे अहम होता है। इसके बाद जान को खतरा बढ़ता ही चला जाता है।

मरीज़ की ऐसे कर सकते हैं मदद

कोई गर्मी के कारण बेहोश होता दिखे, तो उसे तुरंत पानी या इलेक्ट्रोलाइट्स का घोल पिलाएं। बेहोश हो गया हो, तो तुरंत उसके सिर, हाथ, बगलों और तलवों पर ठंडे पानी में भिगोया कपड़ा रखें।

उसे छांव में ले जाएं। हो सके तो बर्फ के पानी की पट्टियां रखें। ये सारे फर्स्ट एड हैं, इसलिए अस्पताल ले जाने में जरा भी देर न करें। मौसम कोई भी हो, थोड़ी-थोड़ी देर में पानी पिलाते रहें। लंबे समय तक धूप में काम करने वालों को चाहिए कि बीच-बीच में किसी ठंडी जगह पर जाकर दो मिनट शरीर को आराम देते रहें।

दो तरह से होता है प्रभाव

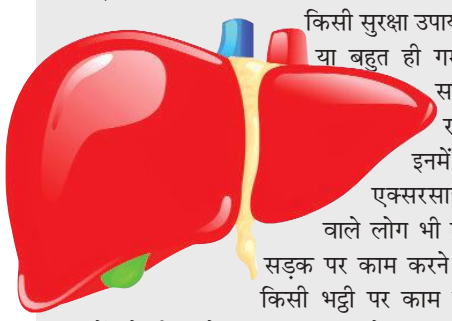

हीट स्ट्रोक उन लोगों को जल्दी प्रभावित करता है, जो बिना किसी सुरक्षा उपाय के धूप में या बहुत ही गर्मी में लंबे समय तक रहते हैं। इनमें जिम में एक्सरसाइज करने वाले लोग भी शामिल हैं। सड़क पर काम करने वाले और किसी भट्ठी पर काम करने वाले मज़दूरों को हीट स्ट्रोक का खतरा सबसे ज्यादा होता है। एक दूसरी तरह के हीट स्ट्रोक का अटैक अमूमन उन लोगों पर होता है, जिनका शरीर बदलते तापमान के हिसाब से जल्दी एडजस्ट नहीं होता। इसमें छोटे बच्चे, बुजुर्ग और वे लोग शामिल हैं, जो किसी लंबी बीमारी से जूझ रहे होते हैं।

हैप्पी ओल्ड एज के स्मार्ट टिप्स

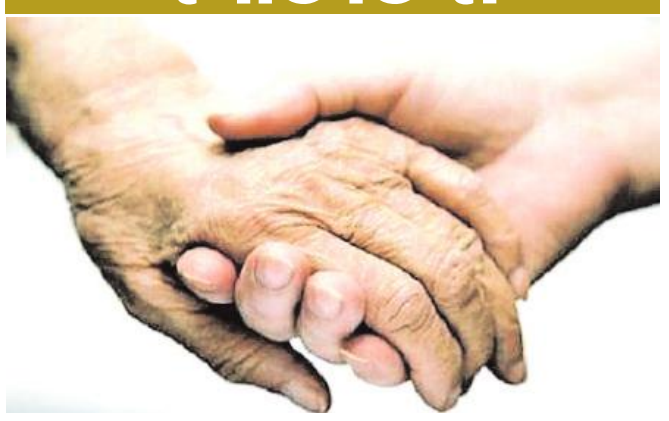

'जियो और जीने दो' के सिध्दांत को स्थापित रखने का प्रयास करें। जीवन के हर क्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण सतर्क रहें। आवश्यक चैकअप समय-समय पर कराते रहें। जहां तक संभव हो प्रौढ़ावस्था में ही अपनी वृध्दावस्था की तैयारी आरंभ कर दें। अपना बैंक-बैलेंस और आभूषणों को भविष्य में आने वाले समय के लिए सुरक्षित रखें। अपना सब कुछ बांटने और देने की भूल, भूलकर भी न करें। व्यस्त और सक्रिय रहने का प्रयास करें। इसके लिए नियमित रूप से समय के साथ स्वयं में भी बदलाव लाने का प्रयास करें। संतुलित और पौष्टिक भोजन का सेवन करें। आपका स्वभाव जितना अच्छा होगा, उतना ही आपका बुढ़ापा अच्छा कटेगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें। युवा पीढ़ी से ही नहीं, बल्कि किसी अन्य से भी अधिक उम्मीदें कभी न रखें। नौकरी से अवकाश के उपरांत घर पर व्यर्थ न बैठें और न ही आत्मकेन्द्रित बनें, बल्कि समाज व सामाजिक कार्यों के प्रति अपना सक्रिय योगदान दें। आज की आधुनिक जीवनशैली में बहुत आवश्यक है आपका समय के साथ चलना, इसलिए समय के साथ-साथ स्वयं में भी बदलाव लाने का प्रयास करें। दूसरे के काम आने का प्रयास करें, इससे आपको भी आत्मसंतुष्टि मिलेगी और दूसरे भी आपसे खुश रहेंगे। इस अवस्था में आप अपनी रुचि व इच्छा के वे सभी कार्य करें, जो आप अपने घर-परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए न कर सके थे। नकारात्मक विचारों को मन में स्थान न दें। सकारात्मक सोच के साथ जीवन के हर सुख-दु:ख को जीने का प्रयास करें। स्वयं में आत्मबल का विकास करें। हर विपरीत परिस्थिति में अपना संयम न खोयें, बल्कि धैर्य और शान्ति से बुरे समय के निकल जाने का इन्तजार करें।

न्यूरोपैथिक दर्द से पाएं राहत

न्यूरोपैथिक पेन एक जटिल और लंबे वक्त तक चलने वाला दर्द है। यह दर्द क्षतिग्रस्त व ठीक तरह से काम न करने वाले या चोटिल स्नायु (नर्व) फाइबर्स के कारण पैदा होता है।

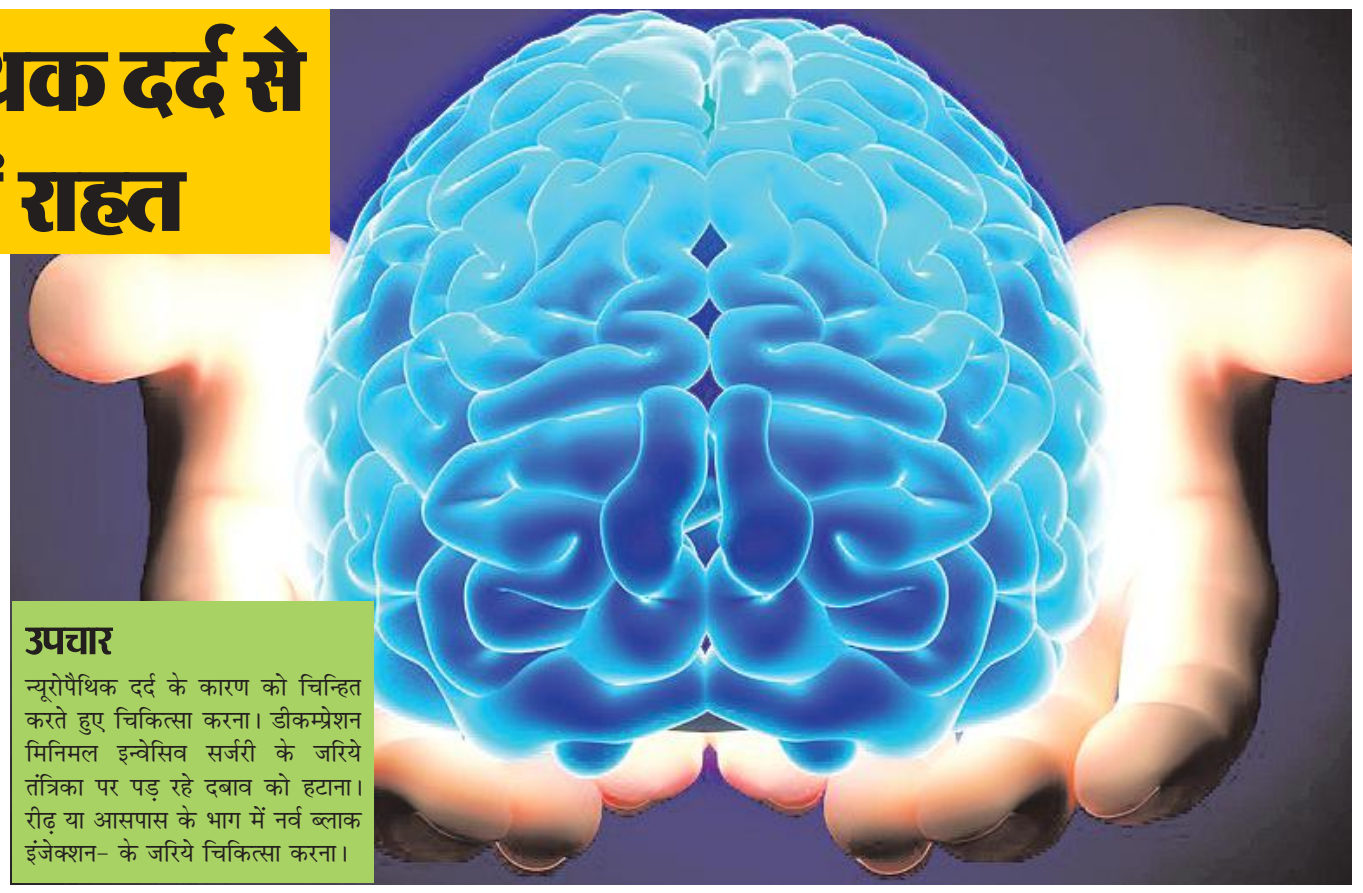

उपचार

न्यूरोपैथिक दर्द के कारण को चिन्हित करते हुए चिकित्सा करना। डीकम्प्रेशन मिनिमल इन्वेसिव सर्जरी के जरिये तंत्रिका पर पड़ रहे दबाव को हटाना। रीढ़ या आसपास के भाग में नर्व ब्लाक इंजेक्शन- के जरिये चिकित्सा करना।

लक्षण

सुइयां जैसी चुभना, जलन होना, त्वचा का सुन्न पड़ जाना और तेज दर्द होना इस रोग के लक्षण हैं। इसके अलावा बिजली के करेंट जैसा झटके के साथ दर्द होना और चींटियां जैसा काटने का अनुभव होना न्यूरोपैथिक दर्द के लक्षण हैं।

कारण

न्यूरोपैथिक दर्द के कुछ सामान्य कारणों में शराब का अत्यधिक सेवन, डाइबिटीज होना, एचआईवी संक्रमण, रीढ़ की हड्डी के ऑपरेशन और पैर व कमर संबंधी समस्या को शामिल किया जाता है।

डायग्नोसिस

न्यूरोपैथिक दर्द का पता लगाने के लिए डॉक्टर शारीरिक जांच करते हैं। आपके स्नायुओं (नर्व्स) को नुकसान पहुंचा है या नहीं, यह पता लगाने का सबसे सामान्य तरीका है- इलेक्ट्रोमायोग्राम के साथ नर्व कंडक्शन स्टडी। सियोमीटर जांच।

गलत धारणाएं और तथ्य

केवल डाइबिटीज से ग्रस्त व्यक्तियों को ही न्यूरोपैथिक दर्द होता है।

इस तरह की धारणा गलत है। सच तो यह है कि डाइबिटीज से ग्रस्त व्यक्तियों में न्यूरोपैथिक समस्या सामान्य रूप से पायी जाती है, लेकिन कीमोथेरेपी लेने वाले, किसी तरह की चोट या बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों, ऐसे व्यक्ति जिनका कोई अंग-भंग हो गया हो, उन्हें भी न्यूरोपैथिक दर्द हो सकता है। बढ़ती उम्र के साथ भी न्यूरोपैथिक दर्द हो सकता है।

रोकथाम

तंत्रिकाओं (नर्व्स) का दर्द कम करने के लिए डाइबिटीज पर नियंत्रण रखें। नशे से दूर रहें और व्यायाम करें।

व्यायाम से पैरों और पंजों के स्नायुओं में रक्त संचार ठीक तरह से होता है।

व्यायाम- उंगलियों और हाथों को गोल-गोल घुमाएं, पूरे शरीर की मांसपेशियों को स्ट्रेच करें।

खान- पान: में साबुत अनाज, विटामिन सी युक्त फल और हरी पत्तेदार सब्जियां, टमाटर और पौधों से प्राप्त वसा का सेवन लाभकारी है।

क्यों उठ रहा है दिमाग में

बीते दिनों नेपाल और भारत में आए भूकंप के बाद तमाम लोग डॉक्टरों और मनोरोग विशेषज्ञों के पास गए। इनमें से ज्यादातर लोगों की प्रमुख शिकायत थी कि भूकंप के गुजर जाने के बाद वे बेचैनी महसूस कर रहे हैं...। किसी का कहना था कि उन्हें ढंग से नींद नहीं आ रही है कि पता नहीं कब भूकंप के झटके महसूस होने लगे। किसी-किसी का कहना था कि उन्हें अभी भी कभी-कभी यह महसूस होता है कि जमीन हिल रही है...आदि।

पोस्ट ट्रामेटिक स्ट्रेस डिसॉर्डर

इस संदर्भ में नई दिल्ली के वरिष्ठ मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. अचल भगत कहते हैं कि मेरे पास उपर्युक्त समस्याओं के बाबत लोग आए। असल में दो तरह के लोग होते हैं, एक तो वे जिन्हें भूकंप के दौरान जान-माल की क्षति हुई। ऐसे लोग एक मनोरोग- पोस्ट ट्रामेटिक स्ट्रेस डिस्आर्डर- से ग्रस्त हो सकते हैं। ऐसे लोगों में घबराहट बहुत ज्यादा होती है। उनके दिमाग में पुरानी घटनाओं का फ्लैश बैक चलता रहता है।

बचें कैटेस्ट्रॉफिक थिंकिंग- से

जिन लोगों का भूकंप से नुकसान नहीं हुआ है और वे तब भी आशंकाग्रस्त व अत्यधिक भयग्रस्त हैं, तो उनकी इस सोच को मनोचिकित्सकीय भाषा में कैटेस्ट्रॉफिक थिंकिंग (हादसे से संबंधित सोच) कहा जाता है। इस संदर्भ में नई दिल्ली के एक अन्य वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ. गौरव गुप्ता कहते हैं कि भूकंप के बाद तमाम लोगों के मन में डर अपनी जड़ें जमा लेता हैं। धीरे-धीरे यह भय एंग्जाइटी (बेचैनी) में बदल जाता है।

इलाज

कोई व्यक्ति भूकंप के गुजरने के बाद भी बेचैनी महसूस कर रहा है, तो वह मनोरोग विशेषज्ञ से काउंसलिंग व दवा ले। ध्यान दूसरी ओर आकर्षित करें। किसी हॉबी में मशगूल हों। मन को बहलाने का प्रयास करें। ईश्वर का ध्यान करें। इससे आपका मनोबल और आत्मविश्वास बढ़ता है, मन की बेचैनी कम होती है और आप इस सत्य को समझने लगते हैं कि भगवान की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। इसलिए स्वयं को नकारात्मक सोच के दायरे में रखना अपना ही नुकसान करना है।

मायोपिया से बचने के लिए टीवी कम देखें

बात जब मनोरंजन की हो, तो अपने बच्चे को स्क्रीन देखने से ज़्यादा आउटडोर खेलने के लिए प्रोत्साहित करें। यह मायोपिया से बचाव का की फैक्टर हो सकता है। अनुमान है कि भारत में हर तीन में से एक व्यक्ति मायोपिया का शिकार है और बच्चों में यह समस्या बढ़ रही है। एम्स के शोधकर्ताओं के अनुसार भारत में 12 साल की उम्र के आठ बच्चों में से एक को ब्लैकबोर्ड पढ़ने के लिए चश्मा लगता है। इस अध्ययन में दिल्ली के सरकारी और निजी स्कूलों के करीब 10 हज़ार छात्रों की समीक्षा की गई और पाया गया कि 11.6 साल की औसत उम्र के 13.1 फीसदी बच्चे निकट दृष्टि दोष के शिकार हैं। हालांकि अब तक सूरज की रोशनी और मायोपिया का संबंध स्थापित नहीं किया जा सका है लेकिन कई ताज़ा अध्ययनों की दलील है कि सूरज की रोशनी इस रोग से बचाव में मदद करती है। शोधकर्ता कहते हैं कि इस रोग के लिए जीन्स की भूमिका भी हो सकती है। यूरोप और एशिया के 45 हज़ार लोगों पर किये जा रहे एक बड़े अध्ययन में सामने आया है कि दृष्टि से 24 जीन्स का संबंध है जिनमें से 2 इस रोग के कारण से जुड़े हैं। जिन लोगों में ये जीन्स होते हैं उनमें मायोपिया होने की आशंका 10 गुना बढ़ जाती है। प्राइवेट स्कूलों में पढ़ रहे उन बच्चों में मायोपिया के मामले ज़्यादा देखे गये, जिनके अभिभावक या भाई-बहन इस रोग से ग्रस्त हैं या जो उच्च आय वाले परिवारों से संबंधित हैं। यह आनुवांशिकी को नहीं दर्शाता लेकिन कुछ ऐसी गतिविधियों को इंगित करता है जो नेत्र संबंधी समस्या से जुड़ी हैं जैसे टीवी या स्क्रीन गैजेट्स आदि का प्रयोग। शोधकर्ताओं ने पाया कि उन बच्चों में मायोपिया सबसे ज़्यादा पाया गया जो दिन में पांच घंटे से ज़्यादा पढ़ते हैं या टीवी, कंप्यूटर, वीडियो व मोबाइल गेम्स आदि पर रोज़ दो घंटे से ज़्यादा समय बिताते हैं।

स्त्रियों में कुपोषण की समस्या

कुपोषण का अर्थ है पोषण की कमी। पोषण मिलता है उचित आहार-विहार द्वारा। जब अनुचित या मिथ्या आहार-विहार किया जाता है तो प्राय: शरीर में किसी न किसी पदार्थ की कमी होना स्वाभाविक है एवं उस पदार्थ की कमी विभिन्न लक्षणों के रूप में व्यक्त हो कर शरीर को रोगी बना देती है। कुपोषण स्त्री, पुरूष व बच्चे किसी में भी पाया जा सकता है। यहां हम चर्चा करेंगे स्त्रियों में कुपोषण की समस्या पर। आज यह एक ज्वलंत समस्या बन कर खड़ी है। बढ़ती महंगाई व बढ़ती जनसंख्या एवं घटते संसाधनों के कारण यह समस्या निरंतर दुखदायी बनती जा रही है। स्त्री चूंकि परिवार व समाज का महत्वपूर्ण स्तंभ है- अत: उसका स्वस्थ रहना अति आवश्यक है। रोगिणी या कमजोर स्त्री का परिवार कभी सुखी नहीं हो सकता। अत: यह समस्या केवल शारीरिक ही नहीं अपितु सामाजिक समस्या भी है। लक्षण = कुपोषण होने पर प्राय: शारीरिक कमजोरी, मानसिक अवसाद, खून की कमी, शरीर का पीला या सफेद पड़ना, आंखों के चारों ओर कालिमा होना, आंखें गड्ढे में धंसी दिखाई पड़ना, भूख की कमी, थोड़े प्रयास से भी श्वास चढ़ना, चक्कर आना, इसके अलावा किसी विशेष विटामिन या आयरन, प्रोटीन व मिनरल की कमी से होने वाले विशेष लक्षण दिखलाई पड़ते हैं। प्रोटीन की कमी के कारण मांसपोशियों का कमजोर होना और यकृत का ठीक से कार्य न करना, विटामिन ए की कमी से आंखों का कमजोर व बीमार होना पाया जाता है।

विटामिन बी:की कमी से विकार व नाड़ी विकार होते हैं।

विटामिन सी: की कमी होने पर विभिन्न अस्थि रोग होते हैं। इसी प्रकार अन्य अनेक रोगों से शरीर ग्रस्त हो जाता है।

कारण: कुपोषण के अनेक कारण हैं, इनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं। गरीबी, भुखमरी, अपर्याप्त भोजन लेना। गलत भोजन का चयन अर्थात् ऐसा भोजन जिसमें विटामिन-मिनरल या अन्य पोषक पदार्थों का अभाव हो अर्थात् असंतुलित भोजन। आवश्यकता से अधिक भोजन लेना अपच पैदा कर कुपोषण का कारण बनता है।

एक ही प्रकार के विटामिन की अधिकता युक्त भोजन लेना। प्राकृतिक विषमताजन्य पदार्थ जैसे वनस्पतियों के बीज, पीतल, अल्यूमीनियम के बर्तनों में पका खाना। कुसमय भोजन करना, भोजन के प्रति लापरवाही बरतना। सस्ते के चक्कर में नीम-हकीमों की सलाह लेना। गरीबी, ईष्या, घर की सफाई पर ध्यान देना। किसी दिमागी या शारीरिक रोग की वजह से भूख न लगना। कट्टर शाकाहारी होना।

नशेड़ी होना। गर्भावस्था के दौरान, स्तनपान के दौरान। कड़ा परिश्रम करने वालों में खासकर ठंडे प्रदेश में सामान्य खुराक पर्याप्त नहीं होती। कभी-कभी किन्हीं रोगों के कारण भी कुपोषण की समस्या उत्पन्न होती है। लंबी अवधि तक किसी शल्य कर्म के कारण ग्लूकोस का चढ़ना। लंबी अवधि तक एंटीबायोटिक लेने से आंतों के बैक्टीरिया की क्रियाशीलता का कम होना। नेफ्रोटिक सिंड्रोम में प्रोटीन का मूत्र द्वारा बाहर निकल जाना प्रोटीन की कमी का कारण बनता है। डायबिटीज में ग्लूकोज का अधिक मात्रा में मूत्र में आना।

अधिक माहवारी होना लौह तत्व की कमी का कारण बनता है। अतिसार या दस्त आना पोटेशियम की कमी करता है। इस प्रकार उपरोक्त कारणों में से कोई एक कारण भी कुपोषण पैदा कर सकता है। उपरोक्त लक्षणों की जानकारी हासिल कर लेने के पश्चात आप स्वयं भी इसका निर्णय कर सकते हैं कि कहीं आप कुपोषण से ग्रस्त तो नहीं हैं? घर की व घर के अन्य सदस्यों की देखभाल करने में स्त्रियां प्राय: अपनी स्वयं की ओर ध्यान नहीं दे पाती। काम निपटाकर हीं भोजन करने की प्रवृत्ति उन्हें रोगी बना सकती है परन्तु उन्हें अपनी इस आदत को त्यागकर अपना ध्यान अवश्य रखना चाहिए। ऐसा न हो कि कुपोषण का छोटा स्वरूप भी कहीं किसी गंभीर रोग में तब्दील हो जाए। यदि उपरोक्त एक भी लक्षण आपको स्वयं में दिखाई दे तो समय नष्ट किए बिना चिकित्सक से परामर्श लें व उचित उपचार में लापरवाही न बरतें।

'कंगुवा' का टीजर हुआ रिलीज, आमने सामने दिखे सूर्या और बॉबी देओल

मुंबई। दक्षिण भारतीय सिनेमा के लोकप्रिय अभिनेता सूर्या पिछले लंबे वक्त से अपनी आने वाली फिल्म 'कंगुवा' को सुर्खियों में बने हुए हैं। यह फिल्म इसलिए भी खास है क्योंकि इसके जरिए अभिनेत्री दिशा पाटनी तमिल सिनेमा में कदम रखने जा रही हैं। फिल्म में बॉबी देओल भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। प्रशंसक पिछले कुछ दिनों से फिल्म की एक झलक देखने का इंतजार कर रहे थे, जो खत्म हो चुका है। दरअसल, 'कंगुवा' का टीजर सामने आ चुका है। बता दें कि 'कंगुवा' को 38 भाषाओं में रिलीज किया जाएगा। ऐसा पहली बार होगा, जब कोई तमिल फिल्म 38 भाषाओं में दर्शकों के बीच आएगी। फिल्म में सूर्या और बॉबी कभी नहीं देखे गए अवतार में नजर आएंगे, जिसकी झलक सामने आए टीजर में साफ दिख रही है।

लाइफ Style

भूमि पेडनेकर

पहली वेब सीरीज 'दलदल' का किया ऐलान

एजेंसी ▶▶| मुंबई

बॉलीवुड अभिनेत्री भूमि पेडनेकर को आखिरी बार संजय मिश्रा के साथ फिल्म 'भक्षक' में देखा गया था। इसमे उनकी अदाकारी की खूब प्रशंसा हुई थी। इस फिल्म को आप नेटफ्लिक्स पर देख सकते हैं। 'भक्षक' के जरिए भूमि ने ओटीटी की दुनिया में रखा था।

अब भूमि ने अपनी पहली वेब सीरीज का ऐलान कर दिया है, जिसका नाम 'दलदल' रखा गया है। इस सीरीज का निर्देशन 'गुल्लक' के निर्देशक अमृत राज गुप्ता करने वाले हैं। भूमि की पहली वेब सीरीज 'दलदल' ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर दस्तक देगी। फिलहाल इसकी रिलीज तारीख सामने नहीं आई है। सीरीज की कहानी श्रीकांत अग्निस्वरन, रोहन डिसूजा और प्रिया सग्गी ने मिलकर लिखी है। इसकी कहानी विश धमीजा की किताब 'भिंडी बाजार' पर आधारित है। 'दलदल' में भूमि नव नियुक्त डीसीपी रीता फरेरा का किरदार निभाती नजर आएंगी। 'दलदल' के बाद भूमि फिल्म 'मेरी पत्नी का रीमेक' में अभिनय करती दिखाई देंगी। बता दें कि 8 सालों के करियर में भूमि की अब तक सिर्फ दो ही फिल्में हिट रही हैं। पहली फिल्म है बाला, जो 2019 में आई थी और दूसरी है पति, पत्नी और वो, जो भी उसी साल रिलीज हुई थी। इसके अलावा अब तक उनकी पांच फिल्में फ्लॉप रहीं। उनकी फ्लॉप फिल्मों की लिस्ट में सोनचिरैया, सांड की आंख, बधाई दो, रक्षा बंधन और भीड़ शामिल है। बहरहाल, इन फिल्मों के अलावा भूमि ओटीटी पर गोविंदा नाम मेरा और अफवाह में भी दिख चुकी हैं।

हॉलीवुड मसाला

किम ने खोली अपनी पोल...

लॉस एंजिलस। हॉलीवुड एक्टर किम कार्दशियन ने हाल ही में बड़ा खुलासा किया है। किम ने 'द गोप' पोडकास्ट के एपिसोड में खुलासा किया है कि मैंने अब थोड़ा बहुत पीना शुरू कर दिया है, कॉफी और शराब। किम ने 'द गोप' पोडकास्ट के एपिसोड में खुलासा करते हुए कहा, मैंने अब थोड़ा बहुत पीना शुरू कर दिया है, कॉफी और शराब। मुझे ऐसा लगता है कि मुझे खुद को थोड़ी छूट दे देनी चाहिए। बता दें ईऑनलाइन डॉट कॉम की रिपोर्ट के मुताबिक किम ने इन्हें पीना क्यों शुरू किया, इस पर उन्होंने कहा कि वह हमेशा काम के मूड में रहने की अपनी आदत में बदलाव लाना चाहती हैं।

रूह कंपा देने वाली फिल्म 'गॉडजिला वर्सेज कॉन्ग

लॉस एंजिलस। वार्नर ब्रदर्स की साल 2021 की सुपरहिट फिल्म 'गॉडजिला वर्सेज कॉन्ग' के सीक्वल ' 15 मार्च 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक दे चुका है। मॉन्सटर्वर्स की इस फिल्म का दर्शकों को इंतजार था। फिल्म में स्पेशल इफेक्ट्स से बने गॉडजिला व किंग कॉन्ग की कहानी दिखाई गई है। बता दें कि कोरोना महामारी के बाद रिलीज हुई 'गॉडजिला वर्सेज कॉन्ग' को दर्शकों से जबरदस्त प्यार मिला था। फिल्म में हॉलीवुड स्टार एलेक्जेंडर स्कार्सगार्ड, रेबेका हाल, शन ओगुरी, ब्रयान टायरी हेनरी ने स्पेशल इफेक्ट्स से बने गॉडजिला व किंग कॉन्ग के साथ अहम किरदार निभाया था। बता दें कि इससे पूर्व वार्नर ब्रदर्स ने आधिकारिक तौर 'गॉडजिला एक्स कॉन्ग' की अनाउंसमेंट करते हुए एक टीजर रिलीज किया था जिसमें भयानक रूह कंपा देने वाला मंजर दिखाई दे रहा था।

समीर वानखेड़े ने किया मानहानि का केस

मुंबई। सोशल मीडिया स्टार और एक्ट्रेस राखी सावंत अक्सर विवादों में रहती हैं। अब एक बार फिर वो मुश्किल में घिरती नज़र आ रही हैं। मुंबई एनसीबी के पूर्व जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े ने राखी सावंत पर 11 लाख रुपए का मानहानि का केस ठोक दिया है। राखी के अलावा वकील काशिफ अली खान पर भी उन्होंने केस किया है। उन्होंने कहा है कि काशिफ अली खान ने एक टीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में जानबूझकर झूठ बोला और जो बयान दिया वो आधारहीन थे। याचिका में काशिफ के बयान का जिक्र है, जिसमें कथित तौर पर कहा गया था कि समीर वानखेड़े मीडिया को लेकर ऑबसेस्ड हैं और सेलिब्रिटीज को टारगेट करते हैं। उन्होंने ये भी दावा है कि काशिफ अली खान ने अपने सोशल मीडिया अकाइंट इंस्टाग्राम पर भी उसी तरह के कंटेंट को पोस्ट किया और उनके पोस्ट को राखी सावंत ने शेयर किया।

मडगांव एक्सप्रेस का गाना हम यहीं रिलीज

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता कुणाल खेमू के निर्देशन में बनी फिल्म मडगांव एक्सप्रेस का गाना 'हम यहीं' रिलीज हो गया है। कुणाल खेमू फिल्म मडगांव एक्सप्रेस के साथ निर्देशन के क्षेत्र में डेब्यू करने जा रहे हैं। फिल्म में दिव्येंदु शर्मा, प्रतीक गांधी और अविनाश तिवारी की मुख्य भूमिका है। फिल्म का गाना 'हम यहीं' रिलीज हो गया है। गाने के साथ कुणाल खेमू ने गायन-गीत लेखन के क्षेत्र में डेब्यू किया है। हम यहीं गाना कुणाल खेमू द्वारा सह-संगीतबद्ध, गाया और लिखा गया है। गाने का संगीत अंकुर तिवारी कंपोज किया है। रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर के प्रोडक्शन हाउस में बनी 'मडगांव एक्सप्रेस' एक कॉमेडी फिल्म है, जो तीन दोस्तों के एक अतरंगी रोड ट्रिप पर आधारित होगी।

टीवी मसाला

मानिनी डे ने दालचीनी में जीता बेस्ट विलेन का पुरस्कार जीता

नई दिल्ली। यह अभिनेत्री मनिनी डे के लिए जश्न मनाने का समय है, जिन्होंने हाल ही में आयोजित दंगल अवाड्र्स में अपने शो दालचीनी के लिए सर्वश्रेष्ठ खलनायिका का खिताब जीता है। अभिनेत्री का कहना है कि उन्हें अपनी सफलता का जश्न मनाना पसंद है, लेकिन उन्होंने इसे कभी अपने सिर पर हावी नहीं होने दिया। मैं हर जीत का जश्न भगवान को धन्यवाद कहकर मनाता हूं। मैं पार्टी करना चाहती हूं, लेकिन अभी तक मुझे ऐसा करने का कोई अवसर नहीं मिला है। एक और चीज जो मैं सुनिश्चित करती हूं वह है खुद से एक वादा कि मैं इसे कभी भी अपने सिर पर हावी नहीं होने दूंगी। मेरे माता-पिता ने मुझे हमेशा यह याद रखना सिखाया है कि सफलता को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। असफलता एक ऐसी चीज़ है जिससे आपका सिर नीचा नहीं होना चाहिए तो मैं उसी के अनुसार जीती हूँ। मैं बहुत आभारी हूं, मैं खुश हूं, मैं उत्साहित हूं और मैंने अपने लिए मानक और भी ऊंचा स्थापित किया है।भगवान के प्रति ईमानदार, जब मैं काम करती हूं, तो मैं इस उम्मीद के साथ काम नहीं करती कि मुझे कोई पुरस्कार मिलेगा।

अरबाज खान को भाता है फिल्म निर्माण बोले- अभिनय ना भी करूं तो कोई बात नहीं

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता और फिल्म निर्माता अरबाज खान इस समय अपनी फिल्मों और निजी जिंदगी को लेकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। अभिनेता ने जहां 'दबंग 4' की रिलीज का वादा किया है, वहीं वह तकरीबन 4 साल बाद 'पटना शुक्ला' से बतौर निर्माता वापसी करने वाले हैं। ऐसे में हाल में अरबाज ने इतने वर्षों तक कैमरे से दूर रहने और किसी भी फिल्म का निर्माण ना करने को लेकर अपने विचार साझा किए। अरबाज ने कहा कि अगर मैं अभिनय नहीं कर रहा होता हूं तो यह मेरे लिए कोई दिक्कत वाली बात नहीं है। मेरे लिए अभिनय ना करना कोई बड़ा त्याग नहीं है। एक फिल्म की शूटिंग में लगभग 45 दिन लगते हैं, मैं अपने शेड्यूल से इतना समय निकाल सकता हूं। अरबाज के निर्देशन में बनी पटना शुक्ला फिल्म में रवीना टंडन मुख्य भूमिका में होंगी। रवीना के साथ इसमें सतीश कौशिक, मानव विज, चंदन रॉय सान्याल, जतिन गोस्वामी और अनुष्का कौशिक हैं। विवेक बुडाकोटी निर्देशित 'पटना शुक्ला' डिज्नी+ हॉटस्टार पर रिलीज होगी। फिल्म 29 मार्च से स्ट्रीम होगी।

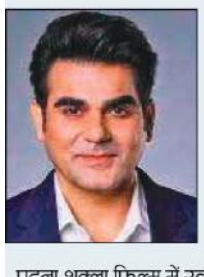

आदित्य की एक्शन फिल्म के हीरो बनेंगे रणवीर सिंह?

मुंबई। रणवीर सिंह को आखिरी बार फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में देखा गया था। अब अभिनेता निर्देशक रोहित शेट्टी की फिल्म 'सिंघम अगेन' में नजर आएंगे। अभिनेता इन दिनों इसी फिल्म की शूटिंग में व्यस्त हैं। अफवाहों का बाजार गर्म है कि रणवीर एक एक्शन थ्रिलर फिल्म में नजर आने वाले हैं, जिसके निर्देशन की कमान यामी गौतम के पति और निर्देशक आदित्य धर ने संभाल रहे हैं। अब आदित्य ने इस खबर पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। कहा जा रहा है कि रणवीर और आदित्य पिछले 3 हफ्तों में 4 से 5 बार मिल चुके हैं। अगर रणवीर और आदित्य साथ आते हैं तो इस फिल्म की शूटिंग मई 2024 की शुरुआत में शुरू होगी। यह फिल्म भारतीय खुफिया एजेंसियों की पृष्ठभूमि पर आधारित है और इसमें रणवीर का एक नया अवतार देखने को मिलेगा। 'सिंघम अगेन' के बाद रणवीर, फरहान अख्तर की सुपरहिट फ्रैंचाइजी 'डॉन' की तीसरी किस्त 'डॉन 3' में नजर आएंगे। इसमें उनकी जोड़ी कियारा आडवाणी के साथ बनी है, जिसे पहली बार देखा जाएगा। 'डॉन 3' 2025 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी। 1978 में 'डॉन' फ्रैंचाइजी के मूल संस्करण में अमिताभ बच्चन मुख्य भूमिका में थे। 2006 में जावेद के बेटे फरहान अख्तर ने 'डॉन' का रीमेक बनाया और शाहरुख खान फिल्म के हीरो बने, जो 'डॉन 2' में भी थे।

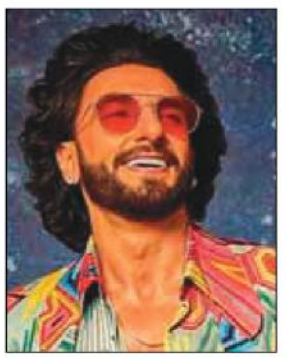

मेरे मेहबूब मेरे सनम बनी बेड न्यूज, दर्शकों को गुदगुदाएगी विक्की, तृप्ति और एमी की तिकड़ी

मुंबई। विक्की कौशल ने फिल्म निर्माता करण जौहर उनके साथ आने वाली फिल्म के बारे में अनाउंस कर दिया है। विक्की ने अपने प्रशंसकों को तृप्ति डिमरी और एमी विर्क के साथ एक नए प्रोजेक्ट के बारे में बताया। फिल्म का नाम है 'बेड न्यूज' नाम की यह फिल्म 19 जुलाई को रिलीज होगी। फिल्म का मोशन पोस्टर और रिलीज डेट जारी किया गया। बता दें कि पहले इस फिल्म का नाम 'मेरे मेहबूब मेरे सनम' था। बेड न्यूज में विक्की कौशल,तृप्ति डिमरी और एमी पहली बार एक साथ नजर आएंगे। आनंद तिवारी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में नेहा धूपिया नजर आएंगी। फिल्म के निर्माता करण जौहर ने लिखा, सबसे मनोरंजक हंगामे के लिए तैयार हो जाइए, हंसाने वाली कई घटनाएं... एक कॉमेडी फिल्म जो सच्ची घटनाओं से प्रेरित है आपका इंतजार कर रही है!! #सिनेमाघरों में 19 जुलाई 2024 को बैडन्यूज़!

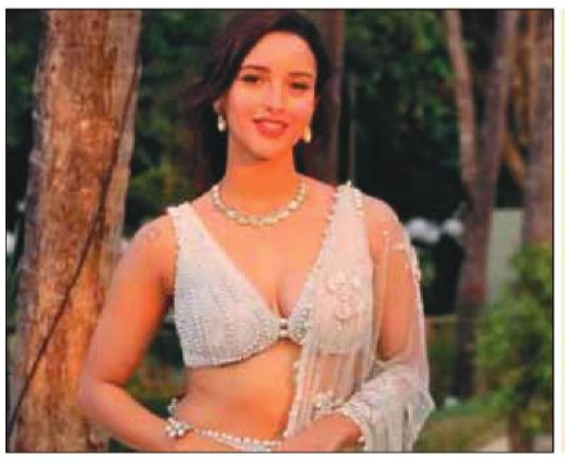

फैंस को टीजर का बेसब्री से इंतजार

अनाउंसमेंट करने से पहले विक्की कौशल ने तृप्ति और एम्मी के साथ एक मजेदार वीडियो शेयर कर पूछा था कि आप पहले कौन सी न्यूज सुनना चाहेंगे, गुड या बैड, जवाब में एमी ने गुड कहा था तो वहीं तृप्ति ने बैड कहा था। फैंस को एक्टर्स का ये प्रमोशनल तरीका भी काफी अच्छा लगा था। फैंस को अब बेसब्री से फिल्म के टीजर का इंतजार है।

रणबीर कपूर की 'रामायण' के लिए करना होगा लंबा इंतजार, इस साल नहीं शुरू होगी शूटिंग

मुंबई। नितेश तिवारी की फिल्म 'रामायण' लंबे समय से चर्चा में है। खासकर फिल्म 'आदिपुरुष' से मिली निराशा के बाद लोगों की नजरें इस फिल्म पर है। फिल्म के कलाकारों को लेकर तरह-तरह की खबरें आती रहती हैं। चर्चा है कि फिल्म में रणबीर कपूर राम बनेंगे और कन्नड़ सुपरस्टार यश, रावण की भूमिका निभाएंगे। हालांकि, इसे लेकर कोई आधिकारिक ऐलान नहीं हुआ है। नई खबर के मुताबिक फिल्म के ठंडे बस्ते में जाने के आसार दिख रहे हैं।

'रामायण' में ये सितारे भी निभाएंगे अहम किरदार

'रामायण' में भगवान राम बने रणबीर की जोड़ी साई पल्लवी के साथ बनी है, जो माता सीता का किरदार निभाएंगी। विभीषण की भूमिका के लिए विजय सेतुपति से संपर्क किया गया है। उधर, कैकई के किरदार के लिए लारा दत्ता से बातचीत चल रही है और सनी देओल भगवान हनुमान बने नजर आ सकते हैं। इसके अलावा रकुल प्रीत सिंह भी फिल्म से जुड़ गई हैं। अभिनेत्री शूर्पणखा की भूमिका में दिखाई देंगी।

अगले साल शुरू होगी फिल्म की शूटिंग

'रामायण' का निर्देशन नितेश तिवारी करने वाले हैं, वहीं फिल्म का निर्माण मधु मंटेना, नमित मल्होत्रा और अल्लू अरविंद मिलकर कर रहे हैं। बॉलीवुड हंगामा की ताजा खबर के मुताबिक, मधु और नमित के बीच अनबन चल रही है। यही वजह है कि 'रामायण' में देरी हो रही है। सूत्र ने कहा, "टीम के अंदर बहुत सारे आंतरिक मुद्दे हैं जिन्हें हल किया जाना बाकी है।" फिल्म की शूटिंग इस साल शुरू नहीं होगी।

'लव एंड वॉर': आलिया भट्ट के साथ काम करने को उत्साहित विक्की कौशल

मुंबई। विक्की कौशल को आखिरी बार फिल्म 'डंकी' में देखा गया था, जिसमें उनकी अदाकारी की खूब प्रशंसा हुई। अब विक्की, तृप्ति डिमरी और एमी विर्क के साथ फिल्म 'बैड न्यूड' में नजर आएंगे। इसके अलावा विक्की के पास संजय लीला भंसाली की फिल्म 'लव एंड वॉर' भी हैं, जिसे लेकर अभिनेता काफी उत्साहित हैं। इस फिल्म में आलिया भट्ट और रणबीर कपूर भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। अब विक्की ने फिल्म को लेकर अपनी खुशी जाहिर की है। यह फिल्म 2025 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

आलिया और रणबीर अपनी कला में माहिर हैं : विक्की

विक्की हाल ही में नेहा धूपिया के शो 'नो फिल्टर नेहा' में पहुंचे थे, जहां उन्होंने बताया कि वह फिल्म 'लव एंड वॉर' को लेकर काफी उत्साहित हैं। विक्की ने कहा, /"मुझे लगता है कि आलिया-रणबीर अपनी कला में माहिर है और यह अवसर पाना मेरे लिए बहुत मायने रखती है। मैं सच में बहुत खुश हूं। मैं उन दोनों के साथ एक ही सेट पर रहने के लिए बहुत उत्सुक हूं।

विक्की की झोली में हैं ये फिल्में

विक्की ने आगमी फिल्म 'बैड न्यूज 19 जुलाई, 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। कॉमेडी के साथ रोमांस के तड़के से भरपूर इस फिल्म के निर्देशन के कमान आनंद तिवारी ने संभाली है तो वहीं करण जौहर इस फिल्म के निर्माता हैं। विक्की इन दिनों अपनी फिल्म एक्शन फिल्म 'छावा' में व्यस्त हैं। वह इसमें छत्रपति शिवाजी महाराज के बेटे संभाजी राजे का किरदार निभा रहे हैं। फिलहाल इसकी रिलीज तारीख का ऐलान नहीं हुआ है।

पांच बार के चैंपियन माही ने विकेट के पीछे किए तीन शिकार

धोनी का चला जादू, 6 विकेट से जीता सीएसके, कोहली के 12 हजार रन पूरे

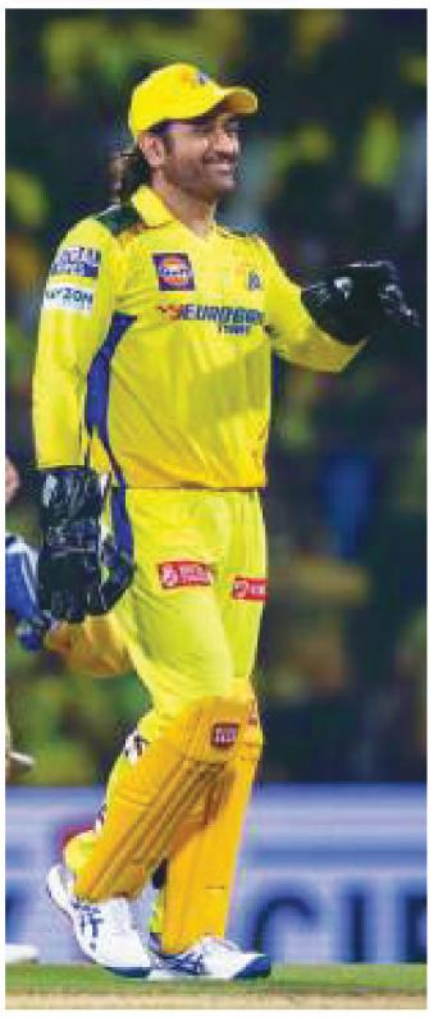

एजेंसी ▶▶| चेन्नई

गत चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स ने शुक्रवार को इंडियन प्रीमियर लीग 2024 के शुरुआती मैच में छह विकेट से जीत हासिल कर यहां चेपॉक स्टेडियम में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर पर अपना दबदबा जारी रखा। पहले बल्लेबाजी करते हुए आरसीबी छह विकेट पर 173 रन का स्कोर बनाने में सफल रही। सीएसके ने 18.4 ओवर में चार विकेट पर 176 रन बनाकर अपने नये कप्तान रुतुराज गायकवाड़ को जीत से शुरुआत करायी। मैच से एक दिन चेन्नई की कप्तानी छोड़ने वाले धोनी ने विकेट के पीछे तीन शिकार किए।

शिवम दुबे (नाबाद 34 रन) और रविंद्र जडेजा (नाबाद 25 रन) पांचवें विकेट के लिए नाबाद 66 रन जोड़कर सीएसके को जीत तक ले गए। गायकवाड़ (15 रन) ने रचिन रविंद्र (37 रन) के साथ अच्छी शुरुआत की लेकिन बड़ी पारी नहीं खेल सके। पर रचिन रविंद्र ने आईपीएल में पदार्पण में अच्छा प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी पारी के दौरान तीन चौके और तीन छक्के जमाए। गायकवाड़ यश दयाल की गेंद पर आउट हुए। रचिन रविंद्र को कर्ण शर्मा ने अपना शिकार बनाया। अजिंक्य रहाणे ने दो छक्के से 19 गेंद में 27 रन और डेरिल मिचेल ने भी दो छक्के से 18 गेंद में 22 रन बनाये। ये दोनों कैमरन ग्रीन के शिकार हुए।

दयाल और दुबे इम्पैक्ट प्लेयर

आरसीबी ने दिनेश कार्तिक की जगह यश दयाल को इम्पैक्ट प्लेयर बनाया। दयाल पारी का दूसरा ओवर लेकर आए। रहाणे के आउट होने के बाद सीएसके ने शिवम दुबे को इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में उतारा। उन्होंने मुस्तफिजुर रहमान को रिप्लेस किया।

कोहली ने ठोका पहला छक्का

विराट कोहली ने पारी के 10वें ओवर में आईपीएल के 17वें सीजन का पहला छक्का जमाया। उन्होंने महीश तीक्षणा की दूसरी बॉल पर छक्का जड़ा। इतना ही नहीं, कोहली ने सीएसके के खिलाफ 1000 रन भी पूरे कर लिए हैं।

किंग कोहली का कीर्तिमान
टी-20 क्रिकेट में बनाए 12 हजार रन

किंग कोहली ने अपनी 21 रन की पारी के दौरान खास मुकाम हासिल कर लिया है। ब्रेक के बाद 22 गज की पिच पर लौटे विराट कोहली भी बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके। हालांकि, कोहली ने टी-20 क्रिकेट में ऐसा मुकाम हासिल कर लिया है, जहां अब तक कोई भी भारतीय बल्लेबाज नहीं पहुंच सका है। दरअसल, चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ खेले जा रहे मुकाबले में छह रन बनाने के साथ ही विराट कोहली ने टी-20 क्रिकेट में 12 हजार रन पूरे कर लिए हैं। कोहली यह मुकाम हासिल करने वाले पहले भारतीय और कुल छठे बल्लेबाज हैं।

स्कोर बोर्ड

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर	रन	गेंद	4	6
कोहली का जडेजा बो मुस्तफिजुर	21	20	0	1
डुप्लेसी का जडेजा बो मुस्तफिजुर	35	23	8	0
पाटीदार का धोनी बो मुस्तफिजुर	00	03	0	0
ग्लेन मैक्सवेल का धोनी बो पाहर	00	01	0	0
कैमरन ग्रीन बो मुस्तफिजुर	18	22	1	0
अनुज रावत रन आउट	48	25	4	3
दिनेश कार्तिक नाबाद	38	26	3	2

अतिरिक्त : 13, कुल : 20 ओवर में 173/6

गेंदबाजी : पाहर 4-0-37-1, देशपांडे 4-0-47-0, तीक्षणा 4-0-36-0, मुस्तफिजुर 4-0-29-4, जडेजा 4-0-21-0.

चेन्नई सुपर किंग्स	रन	गेंद	4	6
गायकवाड़ का ग्रीन बो दयाल	15	15	3	0
रचिंद्र का पाटीदार बो शर्मा	37	15	3	3
रहाणे का मैक्सवेल बो ग्रीन	27	19	0	2
मिचेल का पाटीदार बो ग्रीन	22	18	0	2
शिवम दुबे नाबाद	34	28	4	1
रविंद्र जडेजा नाबाद	25	17	0	1

अतिरिक्त : 16, कुल : 18.4 ओवर में 176/4

गेंदबाजी : सिराज 4-0-38-0, यश दयाल 3-0-28-1, जोसफ 3.4-0-38-0, कर्ण शर्मा 2-0-24-1, मयंक डागर 2-0-6-0, ग्रीन 3-0-27-2, मैक्सवेल 1-0-7-0.

खास-खबर

पंत की वापसी से नए जोश में दिल्ली, किंग्स देंगे कड़ी चुनौती

चंडीगढ़। पिछले सत्र के खराब प्रदर्शन को भुलाकर दिल्ली कैपिटल्स और पंजाब किंग्स इंडियन प्रीमियर लीग के नए सत्र में शनिवार को जब आमने सामने होंगे तो सभी की नजरें महीनों बाद मैदान पर लौट रहे दिल्ली के कप्तान ऋषभ पंत पर टिकी होंगी। दिसंबर 2022 में भयावह कार दुर्घटना में बाल बाल बचे पंत ने क्रिकेट के लिए अपने जुनून के दम पर समय से पहले रिकवरी कर ली है। पंत ने 15 महीने कड़ी मेहनत, जुझारूपन और हिम्मत के साथ रिकवरी को दिए हैं। पंजाब की टीम भी दिल्ली की तरह अभी तक खिताब नहीं जीत सकी है। वह एक ही बार फाइनल में पहुंची है जब 2014 में उसे कोलकाता नाइट राइडर्स ने हराया था। इसके बाद 2019 से 2022 तक टीम लगातार चार सत्र में छठे स्थान पर रही और 2023 में आठवें स्थान पर खिसक गई।

श्रेयस की वापसी मैच में हैदराबाद के नए कप्तान कमिंस देंगे चुनौती

कोलकाता। कोलकाता नाइट राइडर्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच शनिवार को दूसरा मुकाबला खेला जाएगा। मुकाबले में आईपीएल के दो सबसे महंगे खिलाड़ियों आस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाजों मिचेल स्टार्क और पैट कमिंस के अलावा चोट के कारण लंबे समय बाद वापसी कर रहे श्रेयस अय्यर के प्रदर्शन पर भी फोकस रहेगा। कमर की चोट के कारण पिछले साल पूरे सत्र से बाहर रहे श्रेयस केकेआर की कमान संभालेंगे। केकेआर के सबसे कामयाब कप्तान गौतम गंभीर अब मेंटोर के रूप में दूसरी पारी में लौटे हैं। टीम के मालिक शाहरुख खान ने गंभीर से कहा है, 'यह तुम्हारी टीम है। बनाओ या बिगाड़ो।'

खबर संक्षेप

आईपीएल में मैच नहीं यात्रा थकाऊ है : कमिंस

कोलकाता। पहली बार किसी टी20 टीम की अगुआई कर रहे आस्ट्रेलियाई विश्व कप विजेता कप्तान पैट कमिंस ने कहा कि क्रिकेट का छोटा प्रारूप थकाऊ नहीं है लेकिन दो महीने तक चलने वाली इंडियन प्रीमियर लीग के दौरान यात्रा करना और विभिन्न टीमों से भिड़ने के लिए अलग तरह की तैयारी करना निश्चित रूप से बड़ी चुनौती है। विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप जीतने वाली आस्ट्रेलियाई टीम की अगुआई करने वाले कमिंस पर सनराइजर्स हैदराबाद की किस्मत बदलने की बड़ी जिम्मेदारी है जो पिछले सत्र में अंतिम पायदान पर रही थी।

डिसिल्वा-मेंडिस के शतक श्रीलंका 280 रन पर ढेर

सिलहट। कप्तान धनंजय डिसिल्वा (102) और कामिंदु मेंडिस (102) के शतकों से श्रीलंकाई टीम शुक्रवार को यहां बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के पहले दिन शुरुआती झटकों से उबरकर पहली पारी में 280 रन बनाने में सफल रही। स्टंप तक श्रीलंका ने बांग्लादेश के 32 रन तक तीन विकेट झटक लिए थे। बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद श्रीलंका ने 57 रन तक पांच विकेट गंवा दिए थे जिसके बाद डिसिल्वा और कामिंदु दोनों ने समान 102 रन की शतकीय पारियां खेलकर टीम को संभाला।

चैंपियन भारत को मिला कड़ा ग्रुप

चेंगदू। थॉमस और उबेर कप के शुक्रवार को यहां हुए ड्रा में मौजूदा चैंपियन भारतीय पुरुष टीम को मजबूत इंडोनेशिया के साथ जबकि महिला टीम को दमदार चीन के साथ रखा गया। भारतीय टीम अपने पहले खिताब का बचाव करने उतरेगी और उसे मुश्किल ग्रुप में रखा गया है। भारत 2022 में बैंकॉक में हुए फाइनल में इंडोनेशिया को 3-0 से हराकर थॉमस कप जीतने वाला दुनिया का छठा देश बना था। उबेर कप में भारतीय महिला बैडमिंटन टीम को ग्रुप ए में मेजबान और टूर्नामेंट के इतिहास की सबसे सफल टीम चीन (15 बार की विजेता) के साथ ग्रुप ए में रखा गया है।

मियामी ओपन : कालिनिना ने वोज्नियाकी को दी शिकस्त

एजेंसी ▶▶| मियामी गार्डन्स

यूक्रेन की 32वीं वरीयता प्राप्त अन्हेलिना कालिनिना ने हार की कगार पर पहुंचकर शानदार वापसी करते हुए दुनिया की पूर्व नंबर एक खिलाड़ी कैरोलीन वोज्नियाकी को 5-7, 7-5, 6-4 से हराकर मियामी ओपन के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। आस्ट्रेलियाई ओपन 2018 चैंपियन वोज्नियाकी ने दो साल बाद इसी टूर्नामेंट में टेनिस को अलविदा कह दिया था। वह दो बच्चों की मां बनने के बाद पिछले साल कोर्ट पर लौटी।

विश्व रैंकिंग में 11वें स्थान पर काबिज बीट्रिज हदाद मेइया भी धीमी शुआत से उबरते हुए डायने पैरी को 3-6, 6-1, 6-4 से हराकर अगले दौर में पहुंच गई। महिला वर्ग के अन्य मैचों में 24वीं रैंकिंग वाली कैटी बूल्टर भी अगले दौर में पहुंच गई जब ब्रेंड एफ ने 7-6, 1-0 से पिछड़ने के बाद कोर्ट छोड़ दिया। मारिया सक्कारी, टेलर टाउनसेंड, अन्ना कालिन्स्काया, मेडिसन कीस भी अगले दौर में पहुंच गए। पुरुष वर्ग में केइ निशिकोरि को सेबेस्टियन ओफनेर ने 6-3, 6-4 से हराया।

रॉयल्स टीम में जम्पा की जगह कोटियान, शरत टाइटंस से जुड़े

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

मुंबई को 42वां रणजी ट्रॉफी खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले तनुष कोटियान को आस्ट्रेलिया के एडम जम्पा के विकल्प के तौर पर शुक्रवार को राजस्थान रॉयल्स टीम में शामिल किया गया।

कोटियान को उनके बेसप्राइज 20 लाख रुपए में खरीदा गया। पिछले सत्र में जम्पा ने रॉयल्स के लिए छह मैचों में आठ विकेट लिए थे। जम्पा ने टी20 विश्व कप के मद्देनजर कार्यभार का हवाला देकर जम्पा ने आईपीएल से नाम वापिस ले लिया। आफ स्पिनर और निचले क्रम के उपयोगी बल्लेबाज कोटियान ने मुश्ताक अली ट्रॉफी में मुंबई की जीत में अहम भूमिका निभाई थी लेकिन संदिग्ध गेंदबाजी एक्शन के लिए उनकी शिकायत की गई। कोटियान ने शानदार वापसी की और इस रणजी सत्र में प्लेयर आफ द टूर्नामेंट रहे। उन्होंने 502 रन बनाने के साथ 29 विकेट लिए थे।

आईपीएल ने कर्नाटक के विकेटकीपर बल्लेबाज बी आर शरत के रोबिन मिंज की जगह गुजरात टाइटंस से जुड़ने की भी जानकारी दी। झारखंड के मिंज मोटर साइकिल दुर्घटना में घायल होने के कारण बाहर हो गए थे। शरत 20 लाख रुपए की बेसप्राइज पर टीम से जुड़े।

महिला हॉकी टीम को नई मजबूती देंगे

नई दिल्ली। रांची में ओलंपिक क्वालीफायर में हार का दर्द जिंदगी भर उन्हें सालता रहेगा। लेकिन भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सविता पूनिया का वादा है कि अगले चार साल में इतनी मजबूत टीम बनाएंगे कि यह दिन दोबारा नहीं देखना पड़े। सविता ने इंटरव्यू में कहा, 'ओलंपिक क्वालीफायर हारना हमारे लिए ऐसा बुरा पल है जिसे हम खिलाड़ी पूरी जिंदगी शायद नहीं भुला सकेंगे। अभी तक मैं उससे उबर नहीं सकी हूं।' रियो ओलंपिक 2016 के जरिए 36 साल बाद ओलंपिक में लौटी भारतीय महिला हॉकी टीम टोक्यो ओलंपिक में ऐतिहासिक चौथे स्थान पर रही थी।

फीफा विश्व कप क्वालीफायर : भारत अफगानिस्तान ने खेला गोलरहित ड्रॉ

एजेंसी ▶▶| आभा

भारत और अफगानिस्तान ने फीफा विश्व कप 2026 क्वालीफायर में ग्रुप ए में गोलरहित ड्रॉ खेला और दोनों टीमें गोल करने का एक भी मौका भुना नहीं सकी। गुरुवार को देर रात खेले गए मुकाबले में भारत पहले हाफ में गोल करने के करीब पहुंचा जब मनवीर सिंह ने दो मौके बनाए लेकिन गोल नहीं हो सका। इस मैच के बाद भारत ग्रुप ए में तीन मैचों में चार अंक लेकर दूसरे स्थान पर है जबकि कुवैत के तीन अंक है जिसे कतर ने 3-0 से हराया।

अफगानिस्तान ग्रुप में चौथे स्थान पर है। डामाक स्टेडियम पर दोनों टीमों ने शुरुआत में काफी आक्रामक खेल दिखाया। अफगानिस्तान ने अपनी रफ्तार और कद काठी के दम पर दबदबा बनाने की कोशिश की तो भारतीयों की पासिंग अच्छी थी। जनवरी में सीनियर टीम में पदार्पण करने वाले विक्रम प्रताप सिंह पहली बार अंतिम एकादश में उतरे और अफगान डिफेंस में सेंध मारने की बारंबार कोशिश की। भारत ने पहले ही मिनट से आक्रामक खेल दिखाया और 17वें मिनट में मनवीर अगर गोल कर देते तो भारत को 2026 विश्व कप और 2027 एएफसी एशियाई कप प्रारंभिक संयुक्त क्वालीफिकेशन मैच में दूसरे दौर के बाहरी मुकाबले में बढ़त मिल जाती।

हरियाणा के 15 मुक्केबाज क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

ग्रेटर नोएडा। हरियाणा के मुक्केबाजों ने सब जूनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप के तीसरे दिन प्रभावी प्रदर्शन किया और नौ लड़के तथा छह लड़कियां क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए। उदय सिंह ने 37 किलो वर्ग में पंजाब के रणवीर को 5-0 से हराया। रवि सिहाग (49 किलो), लक्ष्य (52 किलो) और नमन (58 किलो) भी बड़े अंतर से जीतकर आगे पहुंचे। संचित जयानी (46 किलो), अर्पित (55 किलो) और अनमोल दहिया (64 किलो) ने भी अपने अपने मुकाबले जीत लिए। सिद्धांत (61 किलो) ने तमिलनाडु के एम डी देवा आकाश को 3-2 से हराया।

महिंद्रा ने सरफराज के पिता को तोहफे में दी थार...

नई दिल्ली। इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज 4-1 से जीत में अहम भूमिका निभाने पर सरफराज खान को एक खास तोहफा मिला है। महिंद्रा ग्रुप के मालिक आनंद महिंद्रा ने सरफराज के डेब्यू टेस्ट में दमदार प्रदर्शन से प्रभावित होकर उनके पिता नौशाद खान को बधाई दी थी और उन्हें थार गाड़ी तोहफे में देने का वादा किया था, जो उन्होंने शुक्रवार को पूरा कर दिया।

ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप के दूसरे दौर में 21-16, 19-21, 16-21 से हारी सिंधू

सिंधू, सेन हारे, श्रीकांत और राजावत की शानदार जीत

एजेंसी ▶▶| बासेल

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पी वी सिंधू स्विस ओपन सुपर 300 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जापानी युवा खिलाड़ी से हार गई जबकि लक्ष्य सेन को प्री क्वार्टर फाइनल में चीनी ताइपै के ली चिया हाओ ने हराया। भारत के किदाम्बी श्रीकांत, प्रियांशु राजावत और किरण जॉर्ज अपने अपने मुकाबले जीतकर पुरुष एकल वर्ग में क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए।

आल इंग्लैंड चैंपियनशिप में दूसरे दौर में बाहर हुई सिंधू को जापान की 17 वर्ष की जूनियर विश्व चैंपियन तोमोका मियाजाकी के हाथों 21-16, 19-21, 16-21 से पराजय झेलनी पड़ी। वहीं सेन को सिर्फ 38 मिनट में ली चिया हाओ ने 21-17, 21-15 से हराया। श्रीकांत ने मलेशिया के दूसरी वरीयता प्राप्त ली जि जिया को 21-16, 21-15 से हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई जबकि राजावत ने चीन के लेइ ला शि को 21-14, 21-13 से हराया। जॉर्ज ने फ्रांस के एलेक्स लेनियर को 18-21, 22-20, 21-18 से मात दी।

36 मिनट में दर्ज की जीत

महिला युगल में त्रिसा जॉली और गायत्री गोपीचंद ने प्रिया कोंजेंगबाम और श्रुति मिश्रा को हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। उन्होंने सिर्फ 36 मिनट में 21-10, 21-12 से जीत दर्ज की। अब उनका सामना आस्ट्रेलिया की सेतियाना मापासा और एंजेला यू से होगा। भारत की तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा को जापान की रूइ हिरोकामी और युना कातो ने 21-17, 21-16 से हराया।

साथियान ने जीता पहला डब्लूटीटी फीडर खिताब

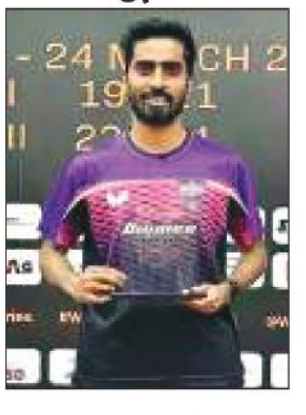

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

भारत के स्टार टेबल टेनिस खिलाड़ी साथियान ज्ञानशेखरन डब्लूटीटी फीडर सीरिज टूर्नामेंट में पुरुष एकल खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बन गए जिन्होंने लेबनान के बैरुत में यह उपलब्धि हासिल की। उन्होंने डब्लूटीटी फीडर बैरुत 2024 के आखिरी दिन भारत के ही मानव ठक्कर को 3-1 (6-11, 11-7, 11-7, 11-4) से हराया।

महिला एकल में शिया लियान नि विजेता रही जिन्होंने सुह यो वोन को 11-9, 11-5, 11-5 से मात दी। पुरुष युगल में भारत के मानव ठक्कर और मानुष उत्पलभाई शाह फाइनल में एंडी परेरा और जॉर्ज कंपोस से 11-5, 7-11, 11-13, 12-14 से हार गए। मिश्रित युगल में भारत की दिया चितले और मानुष शाह ने हमवतन मानव और अर्चना कामथ को 11-6, 10-12, 11-6, 11-6 से हराकर खिताब जीता।

अमेरिका में 25 मार्च से निकलेगी राम मंदिर रथ यात्रा

60 दिन में 48 राज्य 851 मंदिरों तक जाएगी

अयोध्या के राम मंदिर का फाइल फोटो

शिकागो। अमेरिका के शिकागो से शुरू होने वाली राम मंदिर रथ यात्रा दो महीने तक चलने वाली है, जिसमें भारी संख्या में लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका (वीएचपीए) इस यात्रा का आयोजन कर रहा है। वहीं रथ यात्रा के कनाडा खंड का आयोजन कनाडा के विश्व हिंदू परिषद कर रहा है, जो अलग तरह का कार्यक्रम होगा। दर्जनों स्वयंसेवकों ने वीएचपीए के साथ पंजीकरण कराया है। यात्रा के दौरान, जनवरी में अमेरिका में राम मंदिर उद्घाटन समारोह में भाग लेने वाले मंदिरों को भी भागीदारी का प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा।

कनाडा में रथ यात्रा का आयोजन विश्व हिंदू परिषद ऑफ कनाडा करेगी

अमेरिका में पहली बार राम मंदिर रथ यात्रा का हो रहा आयोजन

23 अप्रैल को हनुमान जयंती के दिन राम रथ यात्रा का होगा समापन

851 अमेरिका के मंदिरों को करेगी कवर

150 कनाडा के मंदिरों तक जाएगी

8 हजार मील की दूरी तय करेगी

शिकागो से शुरू होगी रथ यात्रा

यह भी विशेष

- रथ यात्रा का उद्देश्य लोगों को हिंदू धर्म के बारे में जागरूक करना, शिक्षित और सशक्त बनाना है। आने वाली पीढ़ी के लिए जागरुकता बढ़ाने और दुनिया भर में हिंदू धर्म का प्रसार करने के अभियान में एकजुट होना बहुत जरूरी है।
- टोयोटा सिएना वैन को रथ जैसा रूप दिया जाएगा। इसके ऊपर बने रथ में भगवान राम, देवी सीता, लक्ष्मण और हनुमान की मूर्तियां होंगी। उनके साथ अयोध्या के राम मंदिर से विशेष प्रसाद और प्राण प्रतिष्ठा पूजित अक्षत का कलश ले जाया जाएगा।
- रथयात्रा का आयोजन करने वाले विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका के महासचिव अमिताभ मित्तल और हिंदू मंदिर सशक्तिकरण परिषद की तेजल शाह नेतृत्व कर रहे हैं।

खबर संक्षेप

पहली बार प्रत्यारोपित की सुअर की किडनी

वॉशिंगटन। मैसाचुसेट्स जनरल अस्पताल ने एक बयान में कहा कि यह पहली बार है कि सूअर की किडनी किसी जीवित व्यक्ति में प्रत्यारोपित की गई है। इसके अलावा दो पुरुषों को पिग हार्ट ट्रांसप्लांट (सूअरों से हृदय प्रत्यारोपण) किया गया था, हालांकि दोनों की कुछ महीनों के भीतर मृत्यु हो गई थी। बोस्टन के डॉक्टरों ने संसोधित सूअर की किडनी 62 वर्षीय एक मरीज में प्रत्यारोपित की।

भूकंप के झटकों से हिला इंडोनेशिया का जावा द्वीप

जकार्ता। इंडोनेशिया का जावा द्वीप एक बार फिर भूकंप के जोरदार झटकों से हिल गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका के भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने कहा कि शुक्रवार को इंडोनेशिया के जावा द्वीप के पास 6.4 तीव्रता का भूकंप आया, जिसके झटके राजधानी जकार्ता में महसूस किए गए और दूसरे शहर के निवासियों को अपने घरों से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। यूएसजीएस ने कहा कि भूकंप की गहराई लगभग 8 किलोमीटर थी।

भारत और मॉरिटानिया विदेश कार्यालय परामर्श

नई दिल्ली। भारत और मॉरिटानिया ने नौआकोट में अपना पहला विदेश कार्यालय परामर्श आयोजित किया। सह-अध्यक्षता भारत के विदेश मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव सेवला नाइक मुडे और मॉरिटानिया के विदेश मंत्रालय में द्विपक्षीय सहयोग के महानिदेशक मोहम्मद एल हांची केट्टब ने की।

आपका स्वागत है मेरे बड़े भाई.. भूटानी पीएम तोबगे ने किया पीएम मोदी का स्वागत

भारत से भूटान तक चलेगी रेल, पीएम मोदी के दौरे से चीन को लगा बड़ा झटका

एजेंसी ▶▶ थिम्पू

भूटान में आपका स्वागत है, मेरे बड़े भाई.. इन शब्दों के साथ भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे ने दो दिनों के थम्पू दौरे पर पहुंचे भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का गले लगाकर स्वागत किया है। जिससे एक संकेत मिलता है, कि भूटान में चीन की दाल नहीं गल पाई है।

ऐसा इसलिए, क्योंकि भूटान की नई सरकार से मिल रहे संकेतों के मुताबिक, भूटान भारत के खिलाफ चीन को रणनीतिक क्षेत्र में कदम जमाने नहीं देगा। पीएम नरेन्द्र मोदी दो दिनों के भूटान दौरे पर शुक्रवार को राजधानी थिम्पू पहुंचे हैं। स्वागत में पोस्टर्स लगाए गए हैं। पीएम मोदी पारो इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उतरे। वहां मोदी ने जिस गर्मजोशी के साथ भूटान के पीएम को गले से लगाया, उससे संकेत यही मिलते हैं कि भूटान को घबराने की जरूरत नहीं है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो दिनों के भूटान दौरे पर शुक्रवार को राजधानी थिम्पू पहुंचे हैं। वहां पीएम मोदी ने जिस गर्मजोशी के साथ भूटान के पीएम को गले से लगाया, उससे संकेत यही मिलते हैं कि भूटान को घबराने की जरूरत नहीं है।

पीएम मोदी को भूटानी आर्म्ड फोर्सेस ने दिया गार्ड ऑफ ऑनर

- कई मुद्दों पर हुई चर्चा संकेतः अब चीन की नहीं गलेगी दाल
- एयरपोर्ट को दुल्हन की तरह सजाया, फूलों की बनाई गईं रंगोलियां
- शुक्रवार से दो दिन के भूटान दौरे पर पीएम मोदी

एक दिन पहले टल गई थी यात्रा

बता दें कि पीएम मोदी की यात्रा गुरुवार को तय थी, लेकिन थम्पू में खराब मौसम की वजह से यात्रा टल गई थी। आपको बता दें, कि दोनों देशों के बीच औपचारिक राजनयिक संबंध 1968 में स्थापित हुए थे, जिसकी आधारशिला 1949 में हस्ताक्षरित मित्रता और सहयोग संधि थी और बाद में फरवरी 2007 में इसे नवीनीकृत किया गया था।

भूटान दौरे से भारत के साथ दोस्ती की नई गाथा तैयार

पीएम मोदी के भूटान दौरे ने भारत के साथ दोस्ती की नई गाथा तैयार कर दी है। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत और भूटान के बीच रेल सेवा शुरू हो जाएगी। समझौता ज्ञापन में दोनों के बीच दो प्रस्तावित रेल संपर्क का प्रावधान किया गया है, जिसमें कोकराझार-गेलेफू रेल संपर्क और बनारहाट-समत्से रेल संपर्क शामिल हैं। इस यात्रा से भारत के दुश्मन चीन को बड़ा झटका लगा है। दोनों देशों ने शुक्रवार को ऊर्जा, व्यापार, डिजिटल संपर्क, अंतरिक्ष और कृषि के क्षेत्र में कई समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए और दोनों देशों के बीच रेल संपर्क संबंधी समझौते को अंतिम रूप दिया। विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत और भूटान के बीच दीर्घकालिक और अनूठे संबंध हैं।

लाल कालीन और रंगीन झंडे भी लगे

एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री मोदी का को भूटानी आर्म्ड फोर्सेस ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भूटान आगमन से पहले पूरे एयरपोर्ट को दुल्हन की तरह सजाया गया था और फूलों की रंगोलियां बनाई गई थी। पीएम मोदी के स्वागत के लिए भूटानी संस्कृति को चित्रित करने वाला लाल कालीन और रंगीन झंडे भी लगाए गए थे। इसके अलावा, पीएम मोदी के सुरक्षित आगमन को सुनिश्चित करने के लिए हवाई अड्डे की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। अपनी भूटान यात्रा के दौरान पीएम मोदी भारत-भूटान द्विपक्षीय साझेदारी को और बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे।

हैती से 12 लोगों का जत्था निकला

भारतीयों की निकासी के लिए 'ऑपरेशन इंदिरावती' शुरू

- जयशंकर ने ट्वीट कर शेयर की फोटो

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

हैती से भारतीय नागरिकों की निकासी के लिए भारत ने ऑपरेशन इंद्रावती शुरू किया है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बताया कि विदेशों में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा और भलाई के लिए हमारी सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। हैती से भारतीय नागिरकों को निकालकर डोमिनिकन गणराज्य भेजा जाएगा। हैती से 90 भारतीयों को भी निकाला जाएगा।

डोमिनिकन गणराज्य सरकार को भी धन्यवाद दिया

जयशंकर ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि

भारत ने हैती से 12 भारतीयों को निकाला है। उन्होंने डोमिनिकन गणराज्य सरकार को भी धन्यवाद दिया है। पोस्ट के साथ-साथ जयशंकर ने एक्स पर एक तस्वीर भी शेयर की है। गौरतलब है कि हैती में भारत का कोई दूतावास नहीं है। वहां के हालातों पर डोमिनिकन की राजधानी सैंटो डोमिंगो में स्थित भारतीय मिशन द्वारा निगरानी रखी जा रही है।

प्रधानमंत्री दे चुके हैं इस्तीफा

बता दें, हिंसा और लूटपाट के कारण हैती के प्रधानमंत्री एरियल हेनरी ने हाल ही में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। इस्तीफा देने के बाद उन्होंने देश में शांति बहाल करने की अपील की थी। कैरिबियाई देश हैती में गृह युद्ध से हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। देश में फैली हिंसा के कारण 3,62,000 हैती वासियों को विस्थापित होना पड़ा। सशस्त्र गिरोह देश की राजधानी पर कब्जा कर चुके हैं। वे राष्ट्रपति भवन समेत कई सरकारी इमारतों को निशाना बना रहे हैं। सड़कों पर गोलियां चल रही है।

बैठक का नेतन्याहू ने किया विरोध

अरब मंत्रियों और अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन की मुलाकात

एजेंसी ▶▶ काहिरा

अरब मंत्रियों और अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने काहिरा में फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन (पीएलओ) की कार्यकारी समिति के महासचिव हुसैन अल-शेख - फिलिस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास के विश्वासपात्र के साथ बातचीत की। अब्बास का फिलिस्तीनी प्राधिकरण, जो कब्जे वाले वेस्ट बैंक पर सीमित नियंत्रण रखता है। लड़ाई समाप्त होने के बाद गाजा के प्रशासन में भूमिका निभा सकता है।

युद्ध पर तत्काल युद्धविराम सुनिश्चित हो

ब्लिंकन ने पहले ही मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी से मुलाकात कर युद्ध में तत्काल युद्धविराम सुनिश्चित करने और सभी बंधकों की रिहाई पर बातचीत पर चर्चा की थी। विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा कि शीर्ष अमेरिकी राजनयिक अपने नवीनतम मध्य पूर्व दौरे के हिस्से के रूप में एक दिन पहले सऊदी अरब का दौरा करने के बाद मिस्र में हैं।

हमले से 3 की मौत, अंधेरे में डूबे कई शहर

रूस ने यूक्रेन पर किया दूसरा बड़ा हमला, तबाह हुआ विद्युत संयंत्र

एजेंसी ▶▶ कीव

रूस ने पुतिन के फिर सत्ता में आने के बाद यूक्रेन पर हमला तेज कर दिया है। रूस ने यूक्रेन पर दूसरा सबसे बड़ा हमला किया है। रूसी सेना ने इस बार यूक्रेन के सबसे बड़े जलविद्युत संयंत्र सहित देश के कई हिस्सों में बिजली सुविधाओं पर हमला किया, जिससे बड़े पैमाने पर कई शहरों की बिजली आपूर्ति ठप हो गई। इन हमलों के कारण कम से कम 3 लोगों की मौत हो गई। खारकीव क्षेत्र में ऊर्जा सुविधाओं पर हमलों के कारण बिजली आपूर्ति ठप हो गई।

यूक्रेन के ऊर्जा मंत्री जर्मन गैलुशचेंको ने कहा कि रात के समय किए गए ड्रोन और रॉकेट हमले 'यूक्रेनी ऊर्जा क्षेत्र पर सबसे बड़े हमले' हैं। यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की ने कहा कि दुनिया रूसी आतंकवादियों के लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से देखती है। रूस लोगों के सामान्य जीवन के खिलाफ लड़ रहा है।

रात के समय किए गए ड्रोन और रॉकेट हमले

'निप्रो पनबिजली संयंत्र' में लग गई आग

हमलों के कारण 'निप्रो पनबिजली संयंत्र' में आग लग गई जो यूरोप के सबसे बड़े परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान जोपोरिजिया परमाणु ऊर्जा संयंत्र को बिजली की आपूर्ति करता है। संयंत्र की मुख्य 750 किलोवॉट बिजली लाइन कट गई और कम-पावर की एक बैकअप लाइन काम कर रही है। इस संयंत्र पर रूसी सैनिकों का कब्जा है और संयंत्र के आसपास लड़ाई परमाणु दुर्घटना की आशंका के कारण लगातार चिंता का विषय बनी हुई है।

इस्लामिक रेजिस्टेंस के हमले से मजबूर

अफगानिस्तान के बाद अब इराक से निकल रहा अमेरिका

एजेंसी ▶▶ वॉशिंगटन

अमेरिका की इजराइल समर्थित पॉलिसी का पूरी दुनिया समेत उसके ही देश में विरोध होना शुरू हो गया है। यूएन और मानव अधिकार संगठनों ने जैसे ही बाइडेन प्रशासन पर जंग रुकवाने का दबाव बनाया तो देश में मौजूद जायनिस्ट ग्रुप बाइडेन पर भड़क गए। अमेरिका में चुनाव जारी हैं। अब एक और देश के सामने अमेरिका झुकता नजर आ रहा है। अमेरिका इराक में लंबे समय से मौजूद अपनी सेना को वापस बुलाने पर विचार कर रहा है।

हमलों ने यूएस को किया मजबूर

इराक के अल-नुजाबा रेजिस्टेंस प्रवक्ता हुसैन अल-मौसावी ने कहा कि हमने अपने हमलों से अमेरिका को बातचीत की मेज पर वापस आने के लिए मजबूर कर दिया है। हालांकि अभी अमेरिकियों के साथ सरकार की बातचीत से स्पष्ट नतीजे नहीं मिले हैं।

माजिद ब्रिगेड से पस्त पाक सेना

बलूचों ने चीन के 26 अरब डॉलर के बड़े प्रोजेक्ट को कर दिया फेल

एजेंसी ▶▶ बलूच

बलूचिस्तान को पाकिस्तान से अलग करने की मांग करने वाले अलगाववादी समूह बलूच लिबरेशन आर्मी के माजिद ब्रिगेड ने पाकिस्तान के रणनीतिक ग्वादर बंदरगाह के बाहर फिर से एक भीषण बम धमाका किया है। बुधवार को हुए इस बम धमाके में कम से कम 25 सुरक्षाकर्मियों की मौत हो गई है। हालांकि, पाकिस्तान का कहना है, कि हमले में आठ आतंकवादी और दो सुरक्षाकर्मी मारे गए, लेकिन बीएलए ने 25 सुरक्षाकर्मियों को मारने का दावा किया है। माजिद ब्रिगेड ने कराची में चीनी वाणिज्य दूतावास (2018), ग्वादर पर्ल कॉन्टिनेंटल होटल (2019) और कराची में पाक स्टॉक एक्सचेंज (2020) पर भी हमला किया है। इसीलिए, 26 अरब डॉलर का सीपीईसी प्रोजेक्ट पूरी तरह से ठप पड़ा हुआ है, क्योंकि पूरे बलूचिस्तान ने पाक और चीन के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है।

सेना की वर्दी में 5 बंदूकधारियों ने मॉल में की अंधाधुंध फायरिंग, ग्रेनेड भी फेंका, आग की उठी लपटें

आतंकी हमले से दहला मॉस्को, 40 की मौत, 100 से ज्यादा घायल

एजेंसी ▶▶ मास्को

रूस की राजधानी मॉस्को के पास एक कॉन्सर्ट हॉल में लड़ाकू वर्दी पहने 5 बंदूकधारियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की और ग्रेनेड भी फेंका। जिससे मॉल में भयंकर आग लग गई। हादसे में तकरीबन 40 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई और 100 से ज्यादा लोग बुरी तरह घायल हो गए।

मरने वालों और घायलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। रूसी राजधानी के पश्चिमी छोर पर स्थित क्रोकस सिटी हॉल में बंदूकधारियों ने गोलीबारी की। बाद में विस्फोट की आवाजें भी सुनाई दीं और कॉन्सर्ट हॉल आग की लपटों में घिरा दिखा। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। हमलावर ऑटोमैटिक वेपन्स के साथ बिल्डिंग के एंट्री गेट पर पहुंचे और गोलीबारी शुरू कर दी थी। हमलावर सेना की वर्दी में थे।

हमलावरों ने क्रोकस सिटी हॉल पर ग्रेनेड भी फेंका, जिससे मॉल में भयंकर आग लग गई। मॉल में सैंकड़ों लोगों के फंसे होने की आशंका है। मॉस्को के मेयर सर्गेई सोबयानिन ने रूसी मीडिया के हवाले से हमले को भयानक त्रासदी बताया है।

- हॉल में एक म्यूजिक कॉन्सर्ट चल रहा था, आर्मी की वर्दी में आए हमलावर

हेलीकॉप्टर से आग पर काबू...

गोलीबारी शुरू होने के एक घंटे बाद रोसग्वार्डिया स्पेशल फोर्स क्रोकस सिटी हॉल पहुंचे। आग बुझाने के लिए हेलीकॉप्टर से कोशिश की गई। कॉन्सर्ट हॉल में सैकड़ों लोगों के फंसे होने की आशंका के बीच 50 से अधिक एम्बुलेंस मौके पर तैनात की गईं। बंदूकधारियों ने गोलीबारी के बाद कॉन्सर्ट हॉल में बम भी फेंके। वीडियो में इमारत के ऊपर काले धुएं का विशाल गुबार उठता हुआ दिया। स्पेशल फोर्सेज ने इमारत में देररात ऑपरेशन चलाया।

लोगों पर करीब से चलाई गोलियां

वहीं एक वीडियो में दिख रहा है कि वर्दीधारी तीन लोग राइफलें लेकर कॉन्सर्ट हॉल की लॉबी में बिखरे लोगों पर बेहद करीब से गोलियां चला रहे हैं। हमलावरों ने विस्फोटक का भी उपयोग किया है क्योंकि विस्फोटों की आवाज हमले के कई वीडियो में सुनी गई। लोग खून से लथपथ होते हुए नजर आए। वहीं कुछ लोग जान बचाने भागते हुए नजर आए।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक राजेश मीणा द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी एल टॉवर, 3-ए, विद्याआश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं बी-66, कुसुम विहार, जगतपुरा, मालवीया नगर, जयपुर से प्रकाशित।
सम्पादक-राजेश मीणा, Email : sanjeevnitoday@gmail.com मो: 8094811115, (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी)